

2020-21

21-22

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January - 2021

ISSUE No - CCLXXIII (273) A

**Directive Principles of State & Policy
Making - Expectations & Reality**



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor :
Dr D. R. Gawande
Principal,
Smt. Salunkabai Raut
Arts and Commerce College,
Wanoja District, Washim

Editor :
Dr.Mamta V.Pathrikar
Associate Professor ,
Smt. Salunkabai Raut
Arts and Commerce College,
Wanoja District, Washim

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)



Principal,
Arts & Science College
Kurha



Impact Factor - 7.675

ISSN - 2278-9308

B.Aadhar

**Peer-Reviewed & Refreed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal**

January, 2021

ISSUE No - CCLXXIII (273) A

**Directive Principles of State & Policy
Making - Expectations & Reality**

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor :

Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

Dr D. R. Gawande

Executive-Editor :

Principal, Smt. Salunkabai Raut Arts and Commerce College, Wanoja District. Washim

Dr.Mamta V.Pathrikar

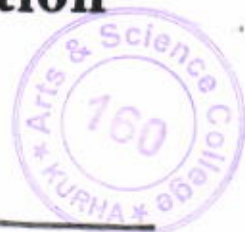
Editor :

**Associate Professor Smt. Salunkabai Raut Arts and Commerce College, Wanoja
District. Washim**

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher





18	MODERN ERA: RFID IN LIBRARY	Prof .Sangita V Dhandar	73
19	Women empowerment and directive principles of state policy.	Prof. Ankita D. Kale	76
20	The Contribution of Women in Fabric of India The Contribution of Savitribai Phule in Women's Education	Prof. Dr. Shirish S Nakhate	81
21	International Relations Terrorism: Causes For Terrorism	Prof. Sidharth A. Patil	86
22	Uniform Civil Code: A Step Towards Balancing Between Equality And Religious Diversification	Miss. Yogita S. Hutke	92
23	Contribution of Women In Sports	Dr. Sangita Mangesh Khadse	98
24	A Comparative Study of Selected Health Related Physical Fitness of Middle- Aged Adults and Old Adults	Mr Sachin.Lpatil Dr.Kishor P.Pathak	100
25	Fundamental Rights And Duties Of Indian Citizen: Directive Principles Of State Policy	Dr. Ganesh Katakdeore	104
26	Women Empowerment & Directive Principles Of State Policy	Dr. Ranjana Shringarpure	110
25	Directive Principles of State Policy: Value & Importance	Dr.Shriram Yerankar	114
26	लोककल्याणकारी राज्य की निर्मिती में राजनिती के निर्देशक सिद्धांतों का महत्व	डॉ.विभा प्र.देशपांडे	118
27	महिला सबलीकरण	गायकवाड निशा मच्छिंद्र	121
28	नितीनिर्देशक सिद्धांतों का क्रियान्वयन एवमं वास्तविकता	प्रा. डॉ. विनोद जे. राठोड	128
29	राजकीय क्षेत्र आणि महिला सबलीकरण	प्रा.डॉ. साधना देशमख	132
30	राज्यनितीची मार्गदर्शक तत्वे आणि सामाजि न्याय—एक अभ्यास	प्रा.डॉ.इकबाल खान गफार खान	135
31	महिला सशक्तिकरण में भारतीय संविधान का योगदान	प्रा.मनिषा मधुसुदन किर्तने	139
32	कोवीड - १९ मध्ये जनसमुदायाचे आरोग्य	प्रा. दिपाली त्र्यंबकराव देशमुख	142
33	आंतरराष्ट्रीय संबंध - दहशतवाद	प्रा. पुंडे सोनाली सयाजी	145
34	भारतीय लोकशाहीच्या विकासात नीतिनिर्देशक तत्वांची भूमिका	प्रा. डॉ. प्रविण गुल्हाने	149
35	कल्याणकारी राज्याच्या स्थापनेत राज्यनीतीच्या मार्गदर्शक तत्वांची भूमिका	डॉ.प्रा.प्रतिभा टावरी	151



लोककल्याणकारी राज्य की निर्मिति में राजनिती के निर्देशक
सिद्धांतों का महत्व
डॉ.विभा प्र.देशपांडे

संविधान के चौथे भाग में अनुच्छेद ३६ से ५१ में राजनिती के निर्देशक सिद्धांत ,हमारे संविधान की एक प्रमुख विशेषता है। विश्व के अन्य देशों के संविधानों में आयरलैण्ड के संविधान को छोड़कर अन्य किसी देश के संविधान में इसप्रकार के तत्व नहीं हैं । प्रशासकीय कानून व शासन का उद्देश्य सामाजिक कल्याण होना चाहिए। सामाजिक समानता निर्माण,साकार करने हेतु एवं कल्याणकारी योजना क्रियान्वित करने हेतु सरकार को निर्देशन की आवश्यकता होती है। अतःसरकार को निर्देशित करने के उद्देश्य से उन पर नैतिक जवाबदारी डालने के उद्देश्य राजनिती के निर्देशक तत्वों का समावेश संविधानकर्ताओं ने संविधान में किया है ।

मौलिक अधिकार ये न्याय प्रविष्ट होते है तो राजनिती के निर्देशक सिद्धांत न्याय प्रविष्ट नहीं होते । याने इन तत्वों का पालन कर यदि सरकार शासन नहीं चलाती है तो, नागरिक न्यायालय में नहीं जा सकते परंतु इनका महत्व इससे कम नहीं होता बल्कि सरकार को दिशा देने का काम ये सिद्धांत करते है । संविधान निर्माताओं का लक्ष्य भारत में लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना था,फलस्वरूप उन्होंने निती के निर्देशक तत्वों में ऐसी बातों का समावेश किया,जिन्हे कार्यान्वित करने पर एक लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना संभव हो सकती है । राज्य का यह कर्तव्य होगा कि प्रशासन में और विधि के निर्माण में इन सिद्धांतों का अनुसरण करे ।

नीति निर्देशक तत्व— जैसा की उपर कहा गया है कि संविधान की धारा ३६ से ५१ में इन तत्वों का वर्णन किया गया है । अध्ययन की सुविधा के लिए इन तत्वों को निम्न वर्गों में बांटा गया है परंतु यहाँ विस्तृत वर्णन न करते हुए प्रमुख बिंदुओं को रखा गया है—

१. आर्थिक सुरक्षा संबंधी निर्देशक तत्व — इस तत्व में आर्थिक सुरक्षा व आर्थिक न्याय नागरिकों को प्राप्त हो इस उद्देश्य से व्यवस्था की गई है ।
२. सामाजिक हित संबंधी निर्देशक तत्व — सामाजिक,आर्थिक सुधारों द्वारा सबको समान अवसर उपलब्ध कराना है,४२ वे संशोधन अधिनियम द्वारा उद्देशिका के संशोधन द्वारा राज्य का उद्देश्य समाजवादी बताया गया है,इसी संशोधन द्वारा भाग.४ में कुछ और परिवर्तन किए गए है,कुछ नए निर्देश जोड़कर संविधान के समाजवादी ढांचे की ओर झुकाव को बढ़ाया गया है ।
३. न्याय, शिक्षा और प्रजातंत्र संबंधी निर्देशक तत्व—इस तत्व में भारत में सुगम और सुलभ न्याय व्यवस्था, शिक्षा के प्रचार और प्रसार तथा प्रजातंत्र की भावना के विकास सम्बन्धी तत्वों का वर्णन किया गया है ।
४. प्राचीन स्मारकों की रक्षा सम्बन्धी निर्देशक तत्व— इन तत्वों द्वारा उन प्रत्येक स्मारक, कलात्मक या ऐतिहासिक रूचि के स्थानों को जिसे संसद द्वारा राष्ट्रीय महत्व का घोषित कर दिया हो इनके रक्षा का कार्य भी राज्य को सौंपा गया है ।
५. अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा सम्बन्धी तत्व— “वसुधैव कुटुम्बकम् ” इस आदर्श पर हम चलने वाले लोग है हमने सदैव ही विश्वशान्ति एवं “खुद जीओ और को भी जीने दो”के सिद्धांत को अपनाया है । इन्ही आदर्शों को अन्तर्राष्ट्रीय तत्व में शामिल किया गया है,जिस पर चलने का हमारा राज्य पूर्ण प्रयत्न करेगा ।



निर्देशको के पीछे जनशक्ति— निदेशक तत्वों को न्यायालय द्वारा प्रवर्तित नहीं किया जा सकता साथही तत्कालीन सरकार इन उद्देश्यों की पूर्ति नहीं करती है तो कोई न्यायालय उनको ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं कर सकता । फिर भी इन तत्वों से संबंधित यह घोषित किया गया है कि “देश के शासन में मूलभूत है और विधि बनाने में इन तत्वों को लागू करना राज्य का कर्तव्य होगा ” । (अनुच्छेद ३७)

इनके पीछे जनशक्ति है । डॉ.अम्बेडकर ने संविधान सभा में कहा था कि “यदि कोई सरकार इनकी अवहेलना करेगी तो उसे निर्वाचन के समय मतदाताओं को उत्तर देना होगा । ” विपक्ष के हाथों में भी यह एक अस्त्र का कार्य करेगा कि उसका अमुक कार्यपालक या विधायी कृत्य निदेशक तत्वों के विरोध में है । संघ का यह कर्तव्य है कि प्रत्येक राज्य जहाँ तक जमें इन निर्देशक तत्वों को क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए । बालकों के लिए निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करे (अनुच्छेद ४५)

दूध देने वाले पशुओं के वध पर प्रतिबंध लगाए, मादक पेय के उपभोग पर प्रतिबंध रखे (अनुच्छेद ४७) केंद्र शासन द्वारा दिये गये निर्देशों का यदि पालन नहीं किया जाता है तो अवज्ञा करने वाले राज्य के विरुद्ध अनुच्छेद ३६५ लागू किया जा सकता है । अन्यथा इन निदेशक तत्वों का कोई महत्व नहीं रह जाएगा ।

निर्देशक तत्वों का महत्व—

१.निदेशक तत्वों में इस बात पर जोर दिया गया है, कि भारतीय राज्य व्यवस्था का उद्देश्य कल्याणकारी राज्य की निर्मिति है ।

२.यदि सरकार इन्हे कार्यान्वित नहीं करती है तो कोई न्यायालय सरकार को बाध्य नहीं कर सकता परंतु यह घोषित किया गया है कि ये तत्व देश के शासन चलाने के लिए मूलभूत नियम है लोकतंत्र में शासन जनमत के आधार पर टिका होता है कोई भी सरकार इन तत्वोंकी उपेक्षा कर अपना राजनितीक कालकिर्द समाप्त नहीं करना चाहेगा ।

३.इन तत्वों का संविधान में समावेश करते समय बहुत से लोगों ने इसकी उपयोगिता पर साशंकता जताई थी, किंतु विगत कई वर्षों में संविधान के कार्यकरण से न्यायालयों में भी इनकी उपयोगिता प्रदर्शित हो गई है ।

४. अनुच्छेद ४० के निर्देशको लागू करने के लिए बहुत से अधिनियम बनाए गए हैं । यह ग्राम पंचायत के गठन और उनको स्वायत्त शक्ति प्रदान करने से संबंधित है । पंचायतों को सिविल शक्ति, न्यायिक शक्ति भी प्रदान की गई है ।

५.कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने हेतु विविध आयोग व बोर्ड गठित किये गये

६.अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के लिए विधान बनाए गए हैं ।

७.ग्रामीण जनता के जीवन स्तर को ऊंचा करने हेतु भारत सरकार ने १९५२ में सामुदायिक विकास योजना का शुभारंभ किया ।

८.उत्पादन के साधन व्यक्तिगत मालकी के न हो इसके लिए बड़ी-बड़ी योजनाएँ सरकार ने अपने हाथों में ली हैं ।

९.अनुसूचित जाती जमाती के लिए अनेक सुविधाएँ सरकार ने की हैं, सरकारी नौकरियों, शिक्षण संस्थाओं में आरक्षण की तरतूद की गई ।

१०.श्रमिकों का शोषण न हो इसलिए विविध कानून बनाये गये हैं ।

जमीनदारी प्रथा समाप्त की गई ।





उच्चतम न्यायालय ने उचित मामली में निदेश निकालकर सरकार से यह अपेक्षा की है कि निदेशों ने जो लक्ष्य सम्मुख रखे हैं उनके प्राप्ति के लिए वह अपना सकारात्मक कर्तव्य पूरा करे ।

परंतु फिर भी कुछ राजनीतिक विद्वानों के अनुसार कुछ तत्व लिखित आदर्श मात्र हैं जैसे मालिक—मजदुर संबंध, दारूबंदी, बालकामगार का प्रश्न वर्तमान में भी सुलझा नहीं, श्रमिकों की काम करने की परिस्थिति इत्यादि कई तत्व पुरी तरह क्रियान्वित नहीं किया गया है । स्वाधीनता के बाद मद्यपान का दुर्गुण हमारी युवापीढी में जिस प्रकार फैला है वह चिंता का विषय है । मोरारजी देसाई जब प्रधानमंत्री थे तब उन्होंने मद्यपान निषेध के कार्यक्रम को नई गति प्रदान की थी । लोककल्याणकारी राज्य जो कि व्यापक शब्द है जिसमें सभी कल्याणकारी योजना व कार्य समाविष्ट उसके निर्मिती हेतु इन तत्वों को कार्यान्वित करना अनिवार्य है । कोई भी राज्य स्वयं को कल्याणकारी राज्य कहलवाने में धन्यता मानता है, उसके लिए शिक्षा, आरोग्य, दारूबंदी, कृषि विकास, संचार साधन की व्यवस्था जीवन आवश्यक वस्तुओं की सभी को उपलब्धता, श्रम की प्रतिष्ठा, उद्योगधंधे का विकास इत्यादि सभी कार्य लोककल्याणकारी राज्य के लिए आवश्यक है, ये सभी कार्य निर्देशक तत्वों के अंतर्गत आते हैं, वर्तमानकाल में समाजहित के दृष्टि से सभी कार्य राज्य को करना होता है इसमें ही निदेशक तत्वों की उपयोगिता समाविष्ट है

संदर्भ ग्रंथ —

१. भारत का संविधान — डॉ. दुर्गादास बसु, वाधवा एण्ड कम्पनी नागपुर

२. भारतीय संविधान — बी.टी. देशमुख

३. भारतीय घटनात्मक तरतुदी — रा.ज. लोटे, पिंपळापुणे अण्ड कं. पब्लिशर्स, नागपूर

Principal
Arts & Sci. College
Kurha



Impact
Factor
7.149

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

**AAYUSHI
INTERNATIONAL
INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
(AIIRJ)**

Monthly e-Journal

VOL-VIII

ISSUE-1

Jan

2024

Address

• Devgiri Nagar, Ambajogai Road, Latur.
• Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
• (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email

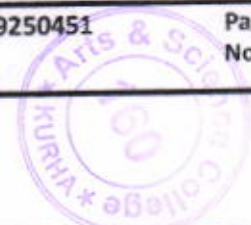
• aiirjpramod@gmail.com
• aayushijournal@gmail.com

Website

• www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
1	Abhijit S. Thorat & Tukaram P. Chavan	Status for Urban Solid Waste Management in Aurangabad Town of Marathwada Region	1 To 9
2	Dr. Digamber Bhagwat Bhoge	Comparative Analysis of Organic and Inorganic Sugarcane Farming	10 To 13
3	Rakshanda M. Ingale & Sanjaykumar R. Thorat	Effect of Bacterial Strains on Reduction of Physico Chemical Characteristics in Textile Industrial Effluent Treatment System	14 To 18
4	Ms. Sneha Pandit Jadhav & Mr. Nikhil N. Jogdand & Harsha Kailash Jadhav	Impact of Covid-19 on Indian International Trade: A Roadmap Ahead	19 To 23
5	Mrs. Rohini Salunkhe – Chavan	Daily Soap's Impact upon the Rural Women (Kolhapur District)	24 To 30
6	Dr.Pooja Pandurang Patil & Dr.Abhaysingh Jaykumar Patil	Descriptive study of Prakrutik Nakha Parikshan	31 To 32
7	Dr. Chavan T. P. , Mr. Thorat A. S. , Dr. Thorat S. R. & Dr. Amrut Gunwantrao Gaddamwar	Status Of Water Quality Index In Harsul Lake At Aurangabad; A Case Study	33 To 39
8	Dr.Sampada Naseri & Shubhangi Satone	An Analytical Study of Problems of Anganwadi Workers	40 To 44
9	Dr. Sonwane Ramesh Dnyanoba & Dr. Mundhe Chaitali Ganeshrao	Clinical Study to evaluate the efficacy of Bala Tail Abhyanga in Physically Working Person W.S.R. Shramahar	45 To 49
10	Dr.Anil Deshmukh	Positive Outcome of Plyometric Exercises in Enhancement of volleyball skills of school volleyball players	50 To 52
11	Dr. Jyoti Digamber Giri	A Case Report On Management Of Menopausal Syndrome Through Ayurveda With Bala Churna And Shatavari Churna	53 To 56
12	Dr.Umesh Rathi	Effect Of Plyometric Exercises Training On The SAI Basketball Skills Of The Players Of The Age Group 14 To 16 Years	57 To 59
13	Dr. Ramesh Dnyanoba Sonwane & Dr Chaitali Ramesh Nimbhore	To Evaluate the Efficacy of Patra Pinda Sweda in Pain Management of Gridhrasi W.S.R to Sciatica	60 To 64
14	Dr. Nandkumar S. Magar	Ground Water Quality in OsmanabadCity (MS)	65 To 66



Effect Of Plyometric Exercises Training On The SAI Basketball Skills Of The Players Of The Age Group 14 To 16 Years

Dr. Umesh Rathi.

Director of sports, Arts and Science College,
Kurha, Dist. Amravati

Abstract:-

The scholar selected the study "Effect of Plyometric Exercises training on the basketball Skills of the players of the age group 14 to 16 Years", for the study 25 Basketball players were selected of age group 14 to 16 years of age. The players were given the plyometric exercise training for 2 months 90 minutes per day excluding Sundays. The SAI basketball skills selected were (i) Wall pass test (ii) Dribbling test (iii) Jumping and turning in the air. The tests were conducted before plyometric training and scores were recorded, after induction of 2 months training again the SAI basketball skills were tested and score recorded, which were further statistically analyzed and conclusion was drawn that there is positive significant effect of plyometric training on the SAI basketball skills test of basketball players.

Key words – SAI basketball skills, basketball players, Plyometric Exercises, Plyometric training.

The scholar being basket ball player observed that basketball is one of the popular and widely played games in schools and colleges in our country, parents send their kids to various clubs to play basketball for fitness and height gain scholar decided to undertake study of the age group 15 to 18 years old, of basket ball club the average age of the players was 16.5 yrs.

The scholar decided to see the effect of plyometric training on the skills of basketball players, for study the scholar selected SAI basketball test battery consist of following three components

- (i) Wall pass test
- (ii) Dribbling test
- (iii) Jumping and turning in the air

The points for the skill decided by the SAI Basketball skill testing evaluation standards.

Age	Wall pass test	Dribbling test	Jumping and turning in the air	Points
14 yrs and above	45 & more	12.7 & less	630 & more	3
	40-44	12.8-13.1	540-629	2
	35-39	13.2-13.5	560-539	1

The Scholar selected 25 basketball players from basketball club for his research, and then the scholar designed the plyometric exercises and training schedule for selected players. The training

schedule was of 2 months daily 90 minutes in evening from 4 pm to 5.30 pm excluding Sundays on clubs basketball court.

The following exercises were selected by the scholar 1) Medicine ball exercise, 2) Jump on and off the box, 3) Bonds, 4) Hurdle hopping, 5) Box jump, 6) Depth Jump, 7) Two leg hopping, 8) Single leg hopping, 9) Depth jumps, 10) Incline Pushups.

Hypothesis:-

The scholar made the hypothesis that there is positive significant effect of plyometric exercise training on SAI Basketball skill testing evaluation standards of players.

Before starting 2 months training of plyometric exercises, The Scholar conducted the SAI basketball skills test before the plyometric exercises training to players and collected the scores (pre test), then mean and standard deviation of scores were calculated

Table No.1 Mean and standard deviation of pre test scores of SAI basket ball Skill Tests.

Sr. No	Basket Ball Skills	Pretest Mean	Standard Deviation
1	Wall pass test	1.48	0.64
2	Dribbling test	1.68	0.54
3	Jumping and turning in the air	1.28	0.39

Source: - From the actual scores recorded of pre test scores of SAI basket ball Skill Tests.

Discussion: -

The above table no. 1 reveals the scores (mean & standard deviation) before the start of the plyometric training for pre test of Wall pass test mean was 1.48 and standard deviation was 0.64. The Dribbling test mean was 1.68 and standard deviation was 0.54. The Jumping and turning in air mean was 1.28 and standard deviation was 0.39.

After 2 months training of plyometric exercises, the following exercise training given below were given to the Basket ball Players 1)Medicine ball exercise, 2)Jump on and off the box, 3)bonds, 4)Hurdle hopping, 5)Box jump, 6)Depth Jump, 7)Two leg hopping, 8)Single leg hopping, 9)Depth jumps, 10)Incline Pushups.

The training schedule was of 90 minutes daily excluding Sundays. After the completion of training again the SAI Basketball skills test were performed on the players to record the post test scores after the training. The recorded scores were statistically treated and the mean and standard deviations was calculated, which are given in the following table no2

Table No.2 Mean and standard deviation of post test scores of SAI basket ball Skill Tests.

Sr. No	Basket Ball Skills	Post test Mean	Standard Deviation
1	Wall pass test	2.36	0.69
2	Dribbling test	2.64	0.48
3	Jumping and turning in the air	1.68	0.74

Source: - From the actual scores recorded of post test scores of SAI basket ball Skill Tests.

Discussion: -

The above table no. 2 displays the scores (mean & standard deviation) after the plyometric training (post test scores) of Wall pass test mean was 2.36 and standard deviation was 0.69. The Dribbling test mean was 2.64 and standard deviation was 0.48. The Jumping and turning in air mean was 1.68 and standard deviation was 0.74

Now to see the efficacy and impeccable results of the plyometric training given to Basket ball players the data comparison of pre test score and post test scores is done, this comparison is made by

calculating 't' values and comparing it with tabulated 't' values

Table No.3 Mean and standard deviation of Pre test and post test scores with calculated and tabulated 't' values respectively of SAI basket ball Skill Tests.

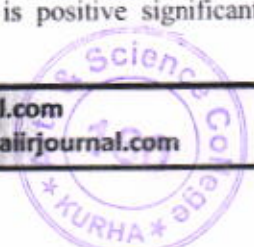
S r. n o.	variable	Pre-test		Post test		C al 't'	tabulated 't' value
		m e a n	s t d e v	m e a n	s t d e v		
1	Wall pass test	1.48	0.64	2.36	0.69	4.63	2.78 at level of significance 0.01 and degree of freedom 24
2	Dribbling test	1.68	0.54	2.64	0.48	6.85	
3	Jumping and turning in the air	1.28	0.39	1.68	0.74	4.00	

Source :- From the scores of Pre test and post test scores and calculated and tabulated 't' values respectively of SAI basket ball Skill Tests.

Discussion:-

From the above table no 3 has the scores (mean & standard deviation) before the start of the plyometric training for pre test of Wall pass test mean was 1.48 and standard deviation was 0.64. The Dribbling test mean was 1.68 and standard deviation was 0.54. The Jumping and turning in air mean was 1.28 and standard deviation was 0.39. It also show the scores of (mean & standard deviation) after the plyometric training (post test scores) of Wall pass test mean was 2.36 and standard deviation was 0.69. The Dribbling test mean was 2.64 and standard deviation was 0.48. The Jumping and turning in air mean was 1.68 and standard deviation was 0.74

To see the effect of Plyometric exercises training on SAI basket ball Skill Tests. The scholar Calculated 't' values of Wall pass test i.e. 4.63, Dribbling test is 6.85 and Jumping and turning in the air is 4.00 respectively, whereas the tabulated 't' value is 2.78 at 0.01 level of significance and 24 is degree of freedom, hence the hypothesis is proved that there is there is positive significant effect of



plyometric exercise training on SAI Basketball skill testing evaluation standards of players

Conclusion:-

The investigation establishes that the Calculated 't' values of Wall pass test i.e. 4.63, Dribbling test is 6.85 and Jumping and turning in the air is 4.00 respectively, whereas the tabulated 't' value is 2.78 at 0.01 level of significance and 24 is degree of freedom, hence the hypothesis is proved that there is positive significant effect of plyometric exercise training on SAI Basketball skill testing evaluation standards of players

References

1. Noyes FR, Barber-Westin SD, Smith ST, Campbell T, Garrison TT: A training program to improve neuromuscular and performance indices in female high school basketball players. *J Strength Conditioning Research* 26: 709-719, 2012.
2. Chato Padhyay, "Effect of weight training on the jumping ability of volley ball & Basket ball player", masters Degree Dissertation LNGPE Gwalior 1982.
3. Muthu Kalyani, "A comparative study of vital capacity of the kabaddi and basket ball women players", unpublished master degree Dissertation, Kamraj University maduraj (1986).
4. Nicole J. Chimera, Kathleen A. Swanik, [...], and Stephen J. Straub a study on Effects of Plyometric Training on Muscle-Activation Strategies and Performance in Female Athletes *J. Nata journals J althi training* 2004 jan mar;39; (1):24:31.
5. Ademola Olasupo Abbas "Comparative effect of three models of plyometric training on leg muscle strength of university male students" Ph.D. Study university of Ibadan Nigeria
6. F.M. Inpellizzeri et.al. Effect of Plyometric training on sand versus grass on muscle soreness and jumping and sprinting ability in soccer players, study conducted in neuromuscular laboratory, Schutthess clinic Lengghalde2, 8008 Zurich Switzerland
7. Krishna Kant "The Effect of Six Weeks of Brisk Walking on Aerobic/Cardiovascular Function of Sedentary College Students" *Indian journal of applied research* Volume : 4 | Issue : 9 | September 2014 | ISSN - 2249-555X
8. Jhonson A B plyometric training programme for young children, *journal of strength and conditioning research*, sept 2011 vol.25 issue 9 pp 2623-2366
9. Michel G Miller, "The effect of A 6 week plyometric Training programme on Agility", published online 1st September 2006

Principal
Arts & Sci. College
Kurha



RESEARCH PAPER



SEXUALITY AND GENDER IN ANGELA CARTER'S NOVELS

AJAY N. ABHYANKAR

Assistant Professor, Dept.
of English
Arts & Science College,
Kurha
ajay.abhyankar1@gmail.com

ABSTRACT

The modern literature deals with the feminist perspectives on sexuality and gender, as well as gender roles in the sense of them being socially and culturally conditioned. Violence and fear is presented by the female writers which were imposed on the female gender by the society. The male domination destroys the female desires both mental and physical. Angela carter deals with the same gender issue with the concept of gender and culture and tries to alter the so called gender role assigned by the society. Angela carter materializes the universal fear and personifies and represented through the concept of magical realism.

The novels by Angela Carter, are carnivalized texts that explode sexist ideologies and expose the relative nature of prevailing truths. The narratives of her novels are controlled by their female protagonists. As performing artistes they are typical carnival - grotesque characters. For example, Fewers, the heroine of *Nights at the Circus* is an aerialiste while Nora and Dora in *Wise Children* are music hall artistes. All three of them belong to the ignoble section of society marked by shame and infamy. Fewers is an orphan brought up in a brothel whereas Dora and Nora are illegitimate twins disowned by their father. Nevertheless, the ability of the heroines to shatter all cultural and sexist differences makes the final victory theirs. True to the function of the carnival, all social, sexist and cultural barriers are overthrown thereby allowing for the free mingling of people. By taking control of their own story, the female narrators assume a position of authority from where they freely express their thoughts and feelings without the intervention of the male voice.

She had worked in a various cultures and so we can see the influence of the same in her works. In the beginning of her career she questioned culturally accepted views of sexuality and relations between men and women. In the late 1980s Carter's writings occupied a central position within debates about feminist pluralism and post-modernism. In her novels Carter dramatized how the worlds of the Western world were breaking

down. She wrote, " I am the pure product of an advanced, industrialized, post-imperialist country in decline" .Her interest in changing gender roles formed the basis for her novels.

The reality is too severe for a woman to live it. Therefore, Carter tries to escape from it through magical elements like dreams and fantasies. She severely attacks the male dominated society at the same time she has an angry pity for suffering women. We see, she presents her anger for the suffering of women in her novels. Carter's novels reveal her notable energy and unusual variety of imagination. Her novels are full of fantasies, dreams and mythologies but at the same time Carter take us back from fancies to realities. A woman's specialty of life in male dominated society is suffering. Carter's use of magical elements provides the outlet to the suffering of women. When her novels like *The Magic Toyshop* and *Wise Children* stay themselves in a world of reality whereas the novels like *The Passion of New Eve*, *The Infernal Desire Machines of Doctor Hoffman* and *Nights at the Circus* are detached from reality that is her characters dream their life instead of living it. In fact women do not live, but only dream their life. In this way her novels presents the condition of tragic women.

Angela Carter highlighted the feminist ideology through magical realism. It examines how her feminist ideology has lead her, and how her ideology is different from the other feminists of the time. She is not of the view to glorify mythical and traditional women but to create

strong and new women in search of her own views. Her novels try to create a new body and soul for woman. She talks about all the ideals of feminism on women's construction and liberation. Carter's novels project her clear vision about the construction and her liberation from conventional ideology. Carter constructs every aspect of New Woman under patriarchal pressure and seeks women's freedom. This is also an attempt to see Carter's unconventional ways of making her feminist ideology in relation to postmodern views. Feminism is faithful to the struggle for equality and liberation of women. It is a necessary resistance to patriarchal power. It usually raises the criticism of male attitudes towards female, imposition of culture on women, inferiority of women. Postmodern ideology is concerned with some of the new features of our way of life. It points out that the concepts like patriarchy are not natural but it is cultural and imposed by male dominated society. Postmodernism ideology interrogates, evaluates, overturns and disrupts. Postmodernism is a reaction against modernity. The exploration of cultural ideology and feminist perspectives is a significant element of postmodernism. Postmodern ideology is the way for a successful feminism. Postmodernism and feminism are corresponding to each other.

It focuses on the term magical realism used by Carter to attack and expose the authority of male British ruling classes, their dominant culture and exposed realistic pictures of society. It also focused on the life and exploitations of women, and protest for social justice. It is imperative that the feminist discourse presented in her novels as a whole is understood by looking at her novels collectively. Her achievement to problematize the woman's position in the family unit and her attention to the fissures and gaps in the structures and institutions of patriarchy is focused. Since Carter's novels are repositories of such a vast potential, this tries to study her novel approach to women and their scope for liberation from patriarchy. An earnest attempt has been made to trace the elements of feminism in her novels, and to examine whether her unconventional manner of speaking about women and their

experience evidence any of the peculiarities of postmodernism. Her novels, *Wise Children*, *Nights at the Circus*, *The Passion of New Eve*, *The Infernal Desire Machines of Dr.Hoffman* and *The Magic Toyshop* which have been selected for this study talk about liberty and developed a new way of thinking through the concept of magical realism. Carter dealt with an approach to feminism and the female sexuality, the myth and perceptions of contemporary society and how it challenges our understanding of female versus male sexuality and gender issues.

The main concern of Carter is emancipation of women from the clutches of men. It is desire of every woman to live free and happy life and to search her own identity. Women are always given the inferior position in the society. The society always follows the culture and tradition of the period. Almost all the culture and traditions have given inferior role to women. The women are always sufferers either in the high culture or low culture. If we see religious philosophy, women are given inferior role and considered as lower creature. The patriarchy always suppressed the women and considers her role limited within the house. There is always dominance of men over women. The structure of the society is built in such a way that, it becomes impossible for women to overcome of that structure and traditions. It is because of this suppression there aroused feminist ideology to give expression to their ideas of free women. There are many women writer expressed their ideas and thought against the oppressive nature of society. It was also impossible to them to talk directly against the social system as it is has strong political support. Therefore many feminist writers either used symbols or imagery to write against prevailing social structure. They used many literary devices like symbols, imagery, fantasy, fairy tales and the supernatural elements to write against the social structure and its oppressive nature. Angela Carter is also one such novelist who attack the British society with the help of literary device like magical realism.

In this way present study investigate, the way in which Angela Carter addresses the quest for female empowerment and subordinate

gender role. Carter challenges the culture, tradition and the female oppression in the family and how women have managed to overcome aspects of their discrimination in a male-dominated society. The concept of magical realism proved a means for female emancipation from patriarchy. Carter tried to change the attitude of the society through her female protagonist. As she was an educated woman with activist roots, she took up an interest for feminist theories and empowering narrative. In her fiction, Carter has continuously strived to attack the mythologies by which men run the society. The aim of the feminist writer is to write against the evil of the culture. Carter obviously also takes her chance to discuss sexuality and gender in culture. The artistic heritage is predominantly male while women most of the time only serve as an object of their art. In *Wise Children*, all-female performers on the surface conform to the myth of the seductive woman.

Angela Carter offers an inside look into the fraudulent suppression by a gendered society and strives for an empowerment of its victimized women. The novel suggests several solutions to achieve a better societal future in the patriarchal matrix. However, it is even more so invested in asking questions. When Carter proposes a new kind of societal model through the introduction of several characters, she remains wary of subscribing to just another ideological myth. And despite the obvious urge to break away from the society as it is, the text suggests that its author is aware of the immeasurable strength which the dominant myths of society have assumed in our collective minds. She is aware that this communal feeling brings human subjects back to a type of family. Carter definitely defends a gradual change and hopes to make her readers just a bit wiser about the world. Hence, we could say that her novels are liberating novels in that it allows its readers to develop individual myths by which to live in a better and empowered future.

In this way, Carter presents a patriarchal community that backs up male power and authority. She places her protagonist in the

middle of a patriarchal system. The patriarchal culture praises the male and ignores the needs of the female members in the family. It is the male-dominated world where all men have the right to do anything while the women must keep silent and obedient. The privacy and rights of individuals are defined according to the gender of people. Carter analyzes family as an institution in detail throughout her work. She examines the family institution in terms of the power structure and depicts male as the masculine authority. Victorian society is so certain about gender roles. Even Victorian female novelists are in a problem. That is to say, they want to be equal with men but do not want to seem unwomanly. It is an era when the female ask for equality. Gamble says, Carter takes the issue from the aspect of "femininity and female subordination as cultural constructs" She refers to the idea that women are accepted as the female gender that is constructed by society.

As Gamble explains in her book, Carter plays with the roots of the patriarchal system which constructs even individuals' identities. She points to the idea that all system is based on the superiority of the male gender which is created by sex difference. She refers to the association of power with the male individual as opposed to passivity and submission with the female. She places the rape as the climax and makes her closure with a confession of an incestuous relationship. Carter's point is to emphasize the understanding that women are exposed to make decisions and commands. She is subject to him in all senses. No matter how violent the act is, "rape is a sign of male power and authority over female" The matter is that male domination is based on sexual grounds. Carter points to the sex violence association to ensure male power in gender relations. What it conveys is about the roles of male and female genders within and outside the house.

To clarify, sex and gender are based on the power structure which gives no recognition for woman's sexuality. In line with this, all individuals are subject to the castration process which inflects identities according to genders. A woman is expected to become conformists as

the female gender even though patriarchal gendering ignores her sexuality.

She criticizes that conventional women are not even aware that they live with false identities. Their minds are fully kept with the idea of being complementary to men in some ways. They are not aware of their perceptions of sexuality. Thus they are alienated from their pure identity. Nevertheless, Carter introduces Margaret in such a way that she turns out to be a seeming conformist in the end. Thus she depicts the possible results of oppression on women. Women who are alienated from their conventional female image could reveal their desires through unacceptable ways. Thus Carter points to the fact that women are doomed to be alienated into the female image. Any heterodoxy by women causes further oppression and alienation.

To conclude, Carter object to patriarchal oppression which castrates women's sexuality to ensure male superiority. She opposes the dictation of sexual preferences because it ignores women's perception of sexuality.

Women are given no chance to explore their perceptions of sexuality. The women who are expected to become the female are alienated into false identities. They become alienated from their pure identities. That is why Carter opposed the idea of gender-based on biological sexes. She also points out the ambiguities in women's position in society through her protagonists. She specifically opposes the financial dependence of women on men. Carter simply suggests equality for females and males. She supports the idea of privacy for women to ensure freedom of sexual preference, tendency, and behavior. She gives the idea that the problem of oppression especially on women's sexuality could be worked out through independence for women and equal rights in education and the house. Thus she means to destroy the idea of gender as a social construct because it leads women into alienation.



Principal
Arts & Sci. College
Kurha

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

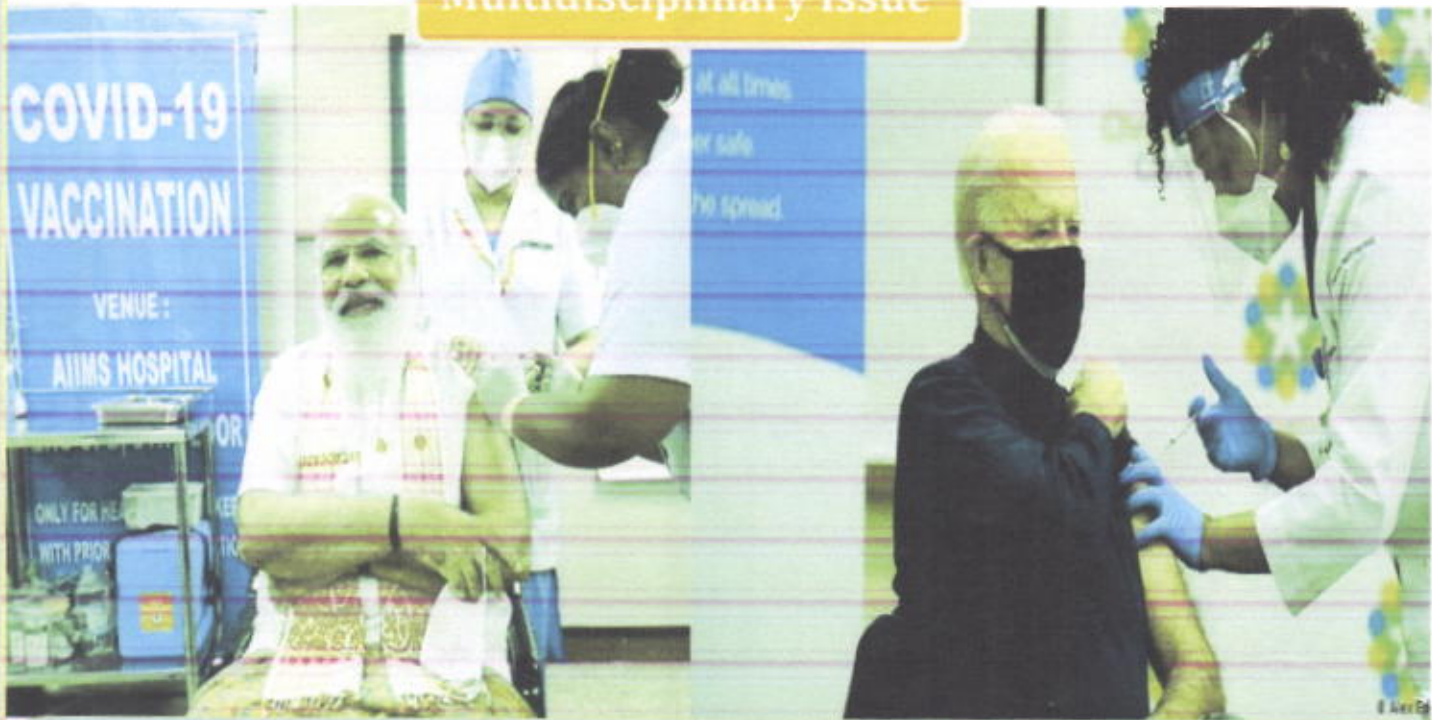
International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January-February-March 2021

Vol.-VIII, Issue-I (B)

Multidisciplinary Issue



Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
 Assist. Prof. (Marathi)
 MGV's Arts & Commerce College,
 Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)



This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)



I
N
T
E
R
N
A
T
I
O
N
A
L
R
E
S
E
A
R
C
H
F
E
L
L
O
W
S
A
S
S
O
C
I
A
T
I
O
N



तुकारामाची कविता:— एक चिंतन

डॉ. निशा जोशी

कला व विज्ञान महा. कुन्हा

ता.तिवसा, जि.अमरावती

मो. ९४२२०३६९३१, ९१७२३९३३३६

E-mail joshinsh123@gmail.com

तुकारामाची कविता अभ्यासत असतांना त्यांच्या कवितांचे काही विशेष जाणवतात ते पाहण्यापूर्वी आपण त्यांच्या काळाचा विचार करू. तुकारामांनी कविता लेखनाला प्रारंभ केला तो काळ सतराव्या शतकाचा. स्वाभाविकच त्यांच्या कवितेत तत्कालीन सांस्कृतिक ताणतणाव, तत्कालीन कौटुंबिक आणि सामाजिक पेच व धार्मिक तणाव स्पष्टपणे आलेले दिसतात. तुकारामांच्या काळात मध्ययुग संपून आधुनिक युग सुरु होत होते. संधीकाळात होणारे स्थित्यंतर, परिवर्तन साहित्यात न उमटते तर नवल. त्याला तुकारामाची कविता अपवाद कशी राहिल. मराठी समाजातील आध्यात्मिक रितेपण त्यांना जाणवले म्हणून ते व्यापकपणे कवितेत प्रतिबिंबित झाले. परिणामी कविता अधिक आक्रमक व कडवट झाली. समाजामधील अनुभव त्यामध्ये प्रतिबिंबित झाल्याने तिला आत्मकथनाचे स्वरूप आले. असे असले तरी वैयक्तिक आणि कौटुंबिक प्रसंगाबरोबरच सामाजिक व वैश्विक पेचही शब्दबद्ध झाले आहे. तरी त्यांची कविता तात्विक पातळीवर राहते. 'तुकोबाच्या कवितेचा विचार मात्र त्यांचे कवित्व वगळून करता येणे अशक्य आहे कारण कवित्व हेच त्यांचे भक्तीचे किंबहुना अस्तित्वाचे साधन आणि माध्यम आहे'

वेद, गीता, भागवताशी नाते:—

या तुकारामांच्या काव्याचा विचार करतांना प्रामुख्याने जाणवते ते म्हणजे वेद, गीता, भागवत यांचा उल्लेख ते खूप आदराने करतात. किंबहुना वेद-गीता-भागवत यांचेशी त्यांची कविता नाते सांगते म्हटल्यास अतिशयोक्तिहोणार नाही.

वेदा निंदी जो चांडाळ। भ्रष्ट सुतकीया खळ।

वंदाची जो निंदा करी। मातेची तो फाने पाळी।

यातील वर्म फक्त आपणच जाणतो असे मृदूल तुकोबाराय इतरांचे वक्तव्य भ्रामक ठरवितात. एवढ्या एकाच अभंगाची ग्वाही मान्य केली तरी महाराज वेद विरुद्ध नव्हते हे सिद्ध होते.' कराडकर यांची भूमिका संत तुकारामाचावरील वेदांचा प्रभाव स्पष्ट करते. वेदनिंदा करणारा चांडाळ, भ्रष्ट, सुतकी व दुष्ट होय. ज्या तिखटपण ने या निंदकांचा निषेध करतात त्यावरून ते वेदांना प्रमाण मानतात.

वेदबाहय लंड बोले तो पाषांड। त्याचे काळे तोंड संतामध्ये

वेदातील तत्त्वज्ञान त्यांना मान्य आहे, पण कर्मकांड नाही. फक्त पोपटपंची त्यांना अभिप्रेत नाही म्हणूनच ते पुढे म्हणतात—

वेदांचा तो अर्थ आम्हासीच ठावा। येरांनी वाहावा भार माथा

वेदांचे सार सांगण्याचा त्यांचा अधिकार आपण मानतो. वेदांप्रमाणे गीतेचाही गौरव तुकारामांनी आपल्या कवितेत केला आहे. गीतेत भगवान श्रीकृष्णांनी दिलेल्या अभिवचनाचा तुकाराम जयजयकार करतात. तू अनन्यभावे माझी भक्ती कर मी तुझा योगक्षेम चालवीन हे भगवानांनी दिलेले अभिवचन आपल्याला माहित आहे. 'अवघे चि फल आले आम्हा हाता। अवघे चि अनंता समर्पिले' असे ते म्हणतात. तेव्हा गीतेतील हा निष्काम कर्मयोग तुकाराम साक्षात जगले. गीतेची शिकवण साक्षात जगणारा संत म्हणून विनोबांना तुकाराम जवळचे वाटले.



विमाव्या शतकात गीता साक्षात जगणाच्या विनोबासारख्या आधुनिक संताला तुकाराम आपले वाटले. श्रेष्ठ तत्वकविता असलेल्या ज्ञानेश्वरीचा ते गौरव करतात तसा भागवताचा आणि व्यासांचाही गौरव ते करतात. याचा प्रत्यय 'व्यासे सांगितले भक्ति हे चि सार। तरावया जना केले भागवत' असे जेव्हा ते म्हणतात तेव्हा येतो. तुकारामाच्या कवितेत गीतेचे आणि ज्ञानेश्वरीचे तसेच व्यासांच्या भागवताचे आणि एकनाथांच्या भागवताचे वर्म जपलेले दिसते. यावरून त्यांची कविता वेद-गीता-भागवत यांचेशी त्यांची कविता नाते सांगते याचा आपणास प्रत्यय येतो.

सत्य, अहिंसा आणि शांती:-

सत्य अहिंसा आणि शांती ही तत्वे तुकारामाच्या कवितेचा कणा आहे. परिणामी सत्य-असत्य, शांती-अशांती, हिंसा-अहिंसा यांच्यातील पुरातन द्वंद्व त्यांच्या कवितेत शब्दचित्रित झाले आहे. या द्वंद्वामध्ये तुकाराम सत्याची बाजू घेतात असत्याचा निषेध करतात, अहिंसेची बाजू घेवून हिंसेचा निषेध करतात, शांतीचा कैवार घेऊन अशांतीचा निषेध करतात. पुरातन काळापासून चालत आलेले हे द्वंद्व आहे. तुकारामांनी सत्याचा केले स्विकार व गौरव आपल्या मनात भरतो. तुकारामांची सत्यनिष्ठा सर्व कवितेत प्रतिबिंबित झालेली दिसते. 'नका काही मागे पुढे रे ठेवू खरेच बोला' असा सत्याचा वसा घ्यायला ते सांगून थांबत नाही तर 'नमो त्या वचन सत्य वदे' असे म्हणून सत्यवचनी माणसाला वंदन करतात.

खऱ्याचे पारखी येत नाही तोटा। निवडे तो खोटा ढाळे दुरी।

तुका म्हणे मज सत्याची आवडी। करिता तातडी येत नाही।

सत्य आणि सत्याभास यांच्यातला फरक तुकाराम सांगतात. लहान मुले खापर घेवून खेळतात, ती काही खरी नाणी नसतात. त्यामुळे त्या व्यवहारातून काही लाभ होत नाही. लहान मुली भातुकलीच्या खेळत लग्न लावतात, पण ती खरी सोयरीक नसते. त्याचप्रमाणे स्वप्नातील दुःखे आणि सुखे भ्रामक असतात. सामान्य मानसाला हा भ्रम जवळचा वाटतो तसे असत्य जवळचे वाटते. सत्य आणि संदेह यांच्यातील द्वंद्वामुळे तुकाराम अस्वस्थ झालेले दिसतात. लोकव्यवहारात खऱ्या-खोट्याची सर्रास भेसळ झालेली दिसते. सत्य आणि असत्य यांच्यातील फरक सांगतांना तुकाराम सत्याचा सुखाशी तर असत्याचा पापाशी संबंध जोडतात. सत्य या तत्वाचे तुकारामांच्या कवितेतील चिंतन विविधांगी आहे.

अहिंसेचा कैवार तुकाराम त्यांच्या कवितेतून घेतांना म्हणतात, 'व्याघ्राचिये भुके वधावी ते गाय। त्याचे नाव काय पुण्य' यामधून पशूहत्याचा निषेध करतात. निरपराध जनावरांना मारणाऱ्या पारध्यांचा निषेध 'श्वापदाने वधी। निरपराधे पारधी' या शब्दात करून चांडाळाची तुलना ते पारध्याशी करतात. पशूहत्या ही हिंसा आहे तसे संतांना त्रास देणे हीही हिंसा आहे. अहिंसेच्या या नकारात्मक व्याख्येबरोबरच तुकाराम तिची सकारात्मक व्याख्याही करतात. अहिंसा म्हणजे आपल्या मनातील वैर काढून टाकणे. ही वैर नसलेली अवस्था म्हणजेही अहिंसा आहे. अहिंसा आणि शांती या एकाच नाण्याच्या दोन बाजू आहेत. म्हणूनच तुकाराम शांतीचा महिमा आपल्या कवितेत जागोजागी वर्णन करतात. शांतीचा सुखाशी संबंध जोडतात. आणि हेच एकमेव सुख आहे असे जोर देऊन सांगतात. शांती हेच सुख असे आवर्जून सांगतात तेव्हा सुखाची कल्पना किती उदात्त आणि अलौकिक आहे हे आपल्या लक्षात येते. 'प्रसन्न दया क्षमा शांती। कई नवविधा होईल भक्ति' असे खऱ्या भक्तिचा संबंध थेट शांतीशी जोडतात.

सत्य, अहिंसा, शांती ही ईश्वराची रूपे असल्यामुळे तुकारामांना ती जवळची वाटतात. त्यांच्या कवितेतील या तत्वांचा गौरव म्हणजे ईश्वराचाच गौरव आहे. असे सर्वव्यापी ईश्वरतत्व तुकारामांच्या कवितेत केंद्रस्थानी आहे.



संत तुकारामाच्या कवितेतील तत्वविचार मांडतांना प्रकाश देशपांडेनी दया, क्षमा, शांती,अहिंसा यांच्यासंदर्भात संत तुकारामांचा दृष्टिकोन मांडून सगुण व निगुणांची केलेली चर्चा स्पष्ट केलेली आहे. राम, कृष्ण आणि विठ्ठल या तीन देवता संत तुकारामांना अतिशय प्रिय होत्या असे प्रतिपादन केले आहे.

तुकारामांच्या कवितेतील ईश्वराचे रूप:-

तुकारामाच्या कवितेतील ईश्वरी रुपाचा विचार करता, त्यांच्या ईश्वराच्या सगुण आणि निर्गुण रुपातील सनातन द्वैत कवितेतही एक प्रश्नचिन्ह उभे करते.

माया ते चि ब्रम्ह ब्रम्ह तेचि माया। अंग आणि छाया तया परी।

अशी दोन रुपातील अद्वैताची ग्वाही ते देतात. संत तुकाराम हे थोर तपस्वी आणि योगी होते. त्यामुळे त्यांना ईश्वराचे निर्गुण रूप जवळचे वाटणे स्वाभाविकच आहे. 'निरंजनी आम्ही बांधिले घर। निराकारी निरंतर राहिलो आम्ही' ईश्वराच्या या निर्गुण रुपाचा त्यांना हेवा वाटतो.'तुम्ही बैसलेती निर्गुणाचे खोळे। आम्हा का हे डोळे कान दिले।' असा उपरोधिक सवाल परमेश्वराला ते करतात. ईश्वर या द्वैतात सापडल्यामुळे भक्तही या द्वैतात अडकला आहे.ईश्वरनिष्ठेच्या आड येणारा हा पेच आहे त्यामुळे सर्वच संतकवींना तो जड गेलेला आहे. निर्गुणाचे एवढे गोडवे गाणाऱ्या तुकारामांचेही सगुणाचे पारडे जड झालेले दिसते. रामकथेत आणि कृष्णकथेत रमलेले तुकाराम विठ्ठलकथेत तर सर्वात अधिक रमलेले दिसतात. विठ्ठल हे त्यांचे आराध्य दैवत आहे म्हणून त्यांची कविता सर्व अश्वनि विठ्ठलमय आहे. तुकारामांचा विठ्ठल हा या स्वप्नसृष्टीचा नायक आहे. राम, कृष्ण, विठ्ठल या सगुण रुपासोबत चराचरात व्यापून राहिलेल्या निर्गुण रुपातूनही ईश्वरतत्वाशी संवाद साधणाऱ्या तुकारामांच्या कवितेतील विश्वभाव आपल्या नजरेत भरतो. विश्वभावाप्रमाणे समत्वभाव हाही त्यांच्या कवितेचा एक महत्वाचा पैलू आहे. ईश्वराने निर्माण केलेल्या या विश्वात मुळात कोणताच भेद नाही, कोणतीही असमानता नाही. सामाजिक समताही या व्यापक वैश्विक समतेचेच अंग आहे. तुकारामांच्या कवितेतील आणि एकूण संतकवितेतील सामाजिक समतेचे हे स्थान लक्षात घेणे आवश्यक आहे. आपल्या भक्तीच्या बळावर मानव क्षुद्रत्वावर, पशुत्वावर मात करून ईश्वररूप होवू शकतो. संत तुकारामांनी समाजाला जागृत करण्याच कार्य केले. समाजातील 'देव' या संकल्पनेचे अंधश्रद्धेत रुपांतर होवू न देता समाजाचा विवेक जागृत ठेवला.या बाबत पठाण म्हणतात,'तुकोबांनी श्रद्धेच्या या पाऊलवाटेवरचा गतिरोधक विवेकाचा निकष लावून एकेश्वरवादाचा पुरस्कार केला.हा निकष म्हणजे भाव आणि विचार यांचा समन्वयच होय'³

तुकारामांची भक्त प्रतिमा व संत प्रतिमा:-

तुकारामांच्या कवितेत भक्त प्रतिमेची अनेक रूपे साकार झालेली आहे. ईश्वर-भक्ताचे नाते वर्णन करतांना भक्त प्रतिमेला अनन्यसाधारण महत्व दिले. ईश्वराला स्वर्गातून खाली आणून आणि माणसाला पृथ्वीवरून वर उचलून या दोघांची एकरूपता साधणारी भक्ताची ही प्रतिमा मध्यस्थाची प्रतिमा आहे असे जाणवते. 'भक्ती तो कठीण शुलावरील पोळी। निवडे तो बळी विरळा शूर' या मार्गाने येणारा माणूस इतका नागवला जातो की, त्याची लंगोटीही रहत नाही, असे तुकाराम म्हणतात. मुळामध्ये निरपेक्ष भक्ती हीच खरी भक्ती, निरपेक्ष भक्तच देवाला आवडतो. 'काही न मागे कोणासी। तो चि आवडे देवासी।' असे तुकाराम म्हणतात. पण अशा भक्ताला तोच तारतो. तो त्याच्या भक्ताला एकटा पाडत नाही.

मागे पुढे उभा राहणे सांभाळित। आलिया आघात निवारवे।

योगक्षेम त्याचे जाणे जडभारी। वाट दावी कर धरुनिया।





निरपेक्ष भक्ताप्रमाणे भोळा भक्तही ईश्वराला जवळचा वाटतो. संत तुकाराम म्हणतात, हा ईश्वर भक्तांचा दास आहे, त्याने धर्मराजाच्या घरी उष्टे काढले. भक्तासाठी ईश्वर वाटेल ते करायला तयार असतो. बळीसाठी तो द्वायपाल झाला, अर्जुनाचा सारथी झाला, पुंडलिकासाठी विटेवर उभ राहिला. असा भक्ताचा महिमा संत तुकाराम सांगतात. नारदासारख्या भक्ताची थोरवी सांगतांना संत तुकाराम म्हणतात, त्याचा हट्ट पुरविण्यासाठी ईश्वराने क्षीरसागर निर्माण केला. या पारंपारिक भक्त प्रतिमांची महती गात तुकाराम या प्राचीन भक्त परंपरेशी आपले नाते जोडतात. डॉ. यशवंत पाठक तुकारामाच्या अभंगाबद्दल सांगतांना म्हणतात, 'तुकारामाच्या दृष्टीने कवित्व हाच पांडुरंगाचा प्रसाद आहे. कविता ही त्यांचा श्वास आहे. जे जे बोलतील ते अनुभवाचे अंग आहे. त्यामुळे तुकारामांना बघायचे ते त्यांच्या अभंगामधून' यावरून ईश्वर-भक्त नात्याचा किती वेगवेगळ्या अंगांनी विचार केला हे लक्षात येते.

भक्त प्रतिमेप्रमाणे संतप्रतिमाही तुकारामांच्या कवितेत प्रभाविपणे चित्रित झालेली आहे. तुकारामांनी आपल्या कवितेत जागोजागी संतांचा महिमा गायला आहे. संत हे ईश्वराचे चालते बोलने मानवी रूप आहे. संत ही निष्कलंक अशी विशुद्ध प्रतिमा आहे. या प्रतिमेला एक उच्च नैतिक आणि आध्यात्मिक अधिष्ठान लाभलेले आहे. संत तुकारामांनी त्यांच्या कवितेत या संत प्रतिमेचा परोपरीने गौरव केलेला आहे. ते केवळ मराठी कविंचा गौरव करून थांबत नाही तर हिंदी संतकवींचाही आत्मियतेने गौरव करतात. मराठीतील आद्य संतकवी असलेल्या ज्ञानेश्वरांविषयी त्यांना नितांत आदर आहे. 'काय ज्ञानेश्वरी उणे। तिही पाठविले धरणे' अशी कृतज्ञता ते व्यक्त करतात.

ज्ञानियांचा गुरु राजा महाराव। म्हणती ज्ञानदेव ऐसे तुम्हा।

मज पामरा हे काय शोरपण। पायाची वहाण पाया बरी।

असे नम्रतेने ते म्हणतात. ज्ञानेश्वरांनी मराठी कवितेचा पाया रचला आणि तुकारामांनी त्यावर कळस चढवला. संत निवृत्ती, सोपान, मुक्ताबाई यांचाही भावपूर्ण उल्लेख कवितेत करतात. चांगदेवाचाही उल्लेख करतात. नामदेवांचे व तुकारामांचे नाते जिव्हाळयाचे होते. 'पहा जनाई सुंदर। तेथे देव पाणी भरी।' अशी दाद तिच्या भक्तीला देतात. एकनाथांना तर जीवाच्या जीवना म्हणतात. कबीर, मीराबाई, रोहिदास या हिंदी संतकवींचा गौरवाने उल्लेख करतात. देवाजवळ धर्मभेद, जातीभेद नाही असे त्यांच्या कवितेतून आवर्जून सांगतात.

तुकारामांनी या संत प्रतिमेला शह देणारी ढोंगी संतांची प्रतिमाही कवितेत शब्दचित्रीत केली आहे. त्यामधील उपरोध वाचकांचे लक्ष वेधून घेतो. सतराव्या शतकातील या धार्मिक अनाचाराचे वास्तववादी चित्रण करणारी तुकारामांची कविता ऐतिहासिक दृष्ट्या महत्त्वाची आहे. आपल्या समाजाचे होत असलेले अधःपतन तुकारामांना सहन होत नव्हते. म्हणून त्यांनी अनप्रवृत्तीवर कडाडून हल्ला केला.

कौटुंबिक जीवनाचे प्रतिबिंब:-

संत तुकारामांच्या कवितेत समाजाचे प्रतिबिंब पडले आहे, तसेच त्यांच्या कौटुंबिक जीवनाचे प्रतिबिंब पडले आहे. संतकवितेत संतकवींपैकी नामदेव आणि तुकाराम यांच्याच कविते कौटुंबिक पेच व्यक्त झाला आहे. परिणामी त्यांच्या कवितेला वेगळे महत्व प्राप्त झाले आहे. तुकारामांची आत्मकथा ही शोककथा आहे. ती दैन्य दारिद्र्याची, हालअपेष्टांची, अपमान अवहलनाची आणि सामाजिक अन्यायाची दुःखद कहाणी आहे.

कोणाची बाईल होउनिया वोढु। संवसारी काढू आपदा किती।

काय तरी देउ तोडितील पोरे। मरती तरी बरे।





अशी आपल्या संसाराची व्यथा त्यांची बायको सांगते. ही उपासमारीची कहाणी सांगतांना म्हणते की,सगळे घर कंगाल झाले आहे. हा नवरा घरात धान्याचे पोते आणले तरी पोराना ते खाऊ देत नाही तर ते वाटून टाकतो. तुकारामांवर सामाजिक अन्यायही खून झाला. गावातील लोकांनी तुकारामांविरुद्ध आरोप करून फिर्याद केली. त्याचा निकाल तुकारामांच्या विरुद्ध लागला. आपला गाव आपल्यावर उलटला म्हणून तुकारामांना फार वाईट वाटले.

काय खावे आता कोणीकडे जावे। गावात रहावे कोणयाबळे।

कोपला पाटील गावचे हे लोक आता घाली भीक काण मज।

असे फार दुःखी अंतकरणाने ते म्हणतात. कुटुंबाला थारा नाही आणि सुख नाही तसेच गावातही थारा नाही. तुकारामांच्या अभंगातून तुकारामाचे नाव काढून टाकले याचाही त्यांना त्रास झाला. तुकारामांच्या अभंगाच्या वहया डोहात बुडविल्या हा प्रसंग म्हणजे त्यांच्यावरच्या अन्यायाचा कळस होता. त्यांच्या आत्मकथेतून दुःखाची जाणीव तीव्रपणे व्यक्त होत असली तरी ते एका संतकवीचे, महाकवीचे दुःख आहे. म्हणून ते वैयक्तिक असले तरी प्रातिनिधीक स्वरुन धारण करते. सोबतच संखाचा हुंकार देखील ती देते.दुःख आनंदाच्या द्वैताची तुकारामांच्या कवितेला आहे. या दोन्ही द्वैतातील ताणतणावामुळे तुकारामांच्या कवितेला वेगळीच गहराई प्राप्त झाली आहे. त्यांच्या कवितेबद्दल खंदारकर म्हणतात की, 'एखादी उपवर मुलगी वरासह वराकडील सर्व मंडळींना एकमुखाने जशी पसंत पडावी त्याप्रमाणे श्री तुकोबांचे महत्व सर्वांना मान्य झाले आहे. याचे कारण संतपणाला आवश्यक व आदर्शभूत असे सर्व गुण त्यांच्या ठिकाणी होते. भगवंताचे ठिकाणी जसे ईश्वरत्व, धर्म, यश, औदार्य, वैराग्य व ज्ञान हे षडगुण त्याप्रमाणे तुकारामांच्या ठिकाणी पारमार्थिक षडगुण होते.' त्यांची वचन आजही आपल्याला अंतर्मुख करतात. यावरून आजच्या काळातही त्यांची कविता किती उपयुक्त आहे ते पटते.

संदर्भ

१. चित्रे दि. पु., 'पुन्हा तुकाराम', पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, दु. आ. १९९०, पृ. ६
२. कराडकर बंडातात्या, मोकळ शै. ज्ञा. (संपा.) जगद्गुरु श्री. संत तुकाराम महाराज स्मारक ग्रंथ, जिजाउ ग्रंथालय प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती, फे. २००९ पृ. २७०
३. कानडे मु. श्री. संपा. अंबाडे विजय, 'जगद्गुरु श्री संत तुकाराम महाराज ४०० वा जन्मोत्सव सोहळा विशेषांक', पिंपरी चिंचवड समाचार, पुणे वर्ष २६, अंक १६८, फेब्रु. २००८ पृ. २४
४. पाठक यशवंत डॉ. 'तुकारामांचे अभंग', साहित्य सेवा प्रकाशन, औरंगाबाद, प्रथमावृत्ती, १९९५, पृ. ९-१०
५. खंदारकर शंकर, 'श्री तुकाराम महाराज गाथाभाष्य' भाग २, प्रका. श्री साधू महाराज संस्थान, उंबरखेड, जि. यवतमाळ, प्रथमावृत्ती, १९६२, पृ. १०

Principal
Arts & Sci. College
Kurha





ASHTI TALUKA SHIKSHAN PRSARAK MANDAL'S

Adv. B. D. Hambarde Mahavidyalaya, Ashti



Tal. Ashti Dist. Beed - 414203 (M.S.)

Accredited by NAAC @ B⁺⁺ Grade with 2.78 CGPA, ISO 9001:2015 Certified, Green Audited College

& Maharashtra Itihas Parishad

A Three-Day Interdisciplinary International Webinar



CERTIFICATE



This is to certify that Prof /Dr Dr.Smita Jadhao
Form Arts and Science College,Kurha

Participated actively in A Three-Day Interdisciplinary International Webinar Organized by Akhil Maharashtra
Itihas Parishad and Adv BD Hambarde Mahavidyalaya, Ashti as a joint venture from 12th to 14th June 2020.

His/Her research paper with title महात्मा गांधीच्या रचनात्मक कार्याची कर्मभूमी -सेवाग्राम आश्रम

was published online in B Aadhar, a peer-reviewed, indexed, multidisciplinary international research journal.
Hence certified.

Dr. Satish Kadam
President, AMIP

Dr. Shivraj Bokade
Secretary, AMIP

Principal
Arts & Sci. College
Kurha

Dr. Ravi Sathbhai
Local Secretary, AMIP

Dr. Sopan Nimbore
Principal, ABDHM, Ashti

CRITERION III- Research, Innovation and Extension

3.3.1. Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC website during the last five years.

Sessoin 2021-2022

session. 2020-21 2021-22

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

ISSUE No- (CCCV)305

July -2021

**Impact of Race, Caste, Class and Religion on
Indian and International Society**



Prof. Virag S. Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Dr Nitin A. Mathankar
Executive-Editor
Principal,
Late Vasant Rao Kolhatkar
Arts College, Rohana

Dr. Deoman S. Umbarkar
Editor
Organizing Secretary
Department of Sociology
Late Vasant Rao Kolhatkar
Arts College, Rohana

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com





Impact Factor – 7.675

ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

July -2021

ISSUE No- 305 (CCCV)

**Impact of Race, Caste, Class and Religion on
Indian and International Society**

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor :

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr Nitin A. Mathankar

Executive-Editor

Principal,

Late Vasant Rao Kolhatkar Arts College, Rohana

Dr. Deoman S. Umbarkar

Editor

Organizing Secretary, Department of Sociology

Late Vasant Rao Kolhatkar Arts College, Rohana

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher




Principal
Arts & Sci. College
Kurha



19	पी. एन. पनिकर केरळ ग्रंथालय चळवळीचे पितामह श्री. सखाराम बी. हारकळ /श्री. दत्तात्रय पी. पवार	95
20	प्राचीन विदुषांचे सांस्कृतिक वैभव कुंडिनपूर (कौंडण्यपूर)—एक ऐतिहासिक अध्ययन डॉ.स्मिता म.जाधव	99
20	जात,वर्ग आणि धर्माचा स्त्रियांवरील प्रभाव प्रा. रमेश एम. भगत	105
21	“श्रीमंत मालोजीराजे यांचे रयत शिक्षण संस्थेच्या वाटचालीतील योगदान” प्रा.डॉ. संतोष तुकाराम कदम	107
22	संगीतात कानसेनांचे महत्व प्रा. ज्ञानेश्वर बोपीलवार	111
23	जाती वर्गाचा आणि धर्माचा राजकारणावर होणार परिणाम डॉ. अजय पी.बोरकर	114
24	सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियामे महिला आंदोलन की भुमिका मनविंदर की भामरा /डॉ. म.वा.पी. डब्लू	120
25	Kiran Desai's Identity Crisis In The Inheritance Of Loss Sushma Mahato /Dr. Omprakash Tiwari	124
26	“Study Of Impact On Tax Revenue Before And After Gst (Goods And Services Tax) Implementation In Sangli District” Dr. Sharwari Sharad Kulkarni	129
27	Religion, Culture, and Caste impact of Modern India Dr.Nitin A.Mathankar	136
28	Dr. Babasaheb Ambedkar's Concept Of "Dhamma" Dr. Manohar Kumbhare	141
29	Role of Digital Erain Social Work Education Dr. Baba P. Shambharkar	145
30	Transformation of Regional Identities: A Study of Anita Nair's The Better Man Mrs.Rita Shewale	151
31	Impact of Caste,Class, And Religion On InterCaste Marriage Dr.Sucheta V. Parkar	154
32	Impact of Caste on National and International society Ms. Priya	160
33	Origin of Khayal Style And It's Development Mrs.Uttara Ratansing Tadavi	164
34	Role Of Yoga For Stress Management Prof.Dr. Shaikh Musabhai Imambhai	166
35	Socio-Economic Condition, Development and Reservation : A Case Study of Muslim Exclusion In The State of West Bengal Rakib Ali Molla	169
36	Literarture On Crises Caused By Nature Dr. Mamata Fuke	173
37	Fresh Water Fishes of Tapi Region of Jalgon District Maharashtra Dr.Hanumant Gopalrao Sadafule/Dr. Sadashiv Hanamant Waghmare	180





**प्राचीन विदर्भाचे सांस्कृतिक वैभव कुंडिनपूर (कौंडण्यपूर)—एक ऐतिहासिक
अध्ययन**

डॉ.स्मिता म.जाधव

इतिहास विभाग प्रमुख कला व विज्ञान महाविद्यालय, कुन्हा ता.तिवसा,
जि.अमरावती.

Mob.8208865157, 9764291038 ,Email- smitamohod15@gmail.com

गोपवारा :-

महाराष्ट्रातील एक समृद्ध आणि संपन्न प्रवेश म्हणजे विदर्भ होय. विदर्भ हा प्राचीन काळापासून वैभवसंपन्न होता. प्राचीन काळात आर्यावर्त व दख्खन यांना जोडण्याचे कार्य प्रामुख्याने विदर्भाने केले. प्राचीन काळात विदर्भाची राजधानी कौंडण्यपूर (कुंडिनपूर) होती. आज अमरावती व वर्धा जिल्ह्याच्या सीमेवर स्थित असणाऱ्या कुंडिनपूर (कौंडण्यपूर) प्रसिद्ध वरदा (वर्धा) नदीच्या तटावर वसलेले आहे. कौंडण्यपूर हे आज २०००-२५०० लोकवस्तीचे खेडे आहे. असे असले तरी ते भारताच्याच नव्हे ती जगाच्या नकाशावर एक पुरातत्वीय स्थळ म्हणून प्रसिद्ध आहे. कौंडण्यपूर येथे उत्खनन झाले त्यावेळी अवशेष आढळले त्यावरून येथे एक प्राचीन संस्कृती होती हे स्पष्ट होते.

बीजशब्द (key words):-

महाराष्ट्र, विदर्भ, कौंडण्यपूर, पुरातन, प्राचीन, उत्खनन, वरदा, पुरातत्वशास्त्र, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, वन्हाड, कौंडण्य, शिलालेख, नगर, पांढरीची टेकाड, देवालय, पुरातत्वेत्ते, देवनागरी, अवशेष, भौगोलिक इ.

प्रस्तावना :-

महाराष्ट्रातील एक समृद्ध भौगोलिक प्रदेशाचा व ऐतिहासाचा वारसा असणारा सांगणारा प्रदेश म्हणजे विदर्भ होय. प्राचीन काळापासून तर अर्वाचिन काळापर्यंत विदर्भाच्या सांस्कृतिक इतिहास अंत्यत वैभव संपन्न आहे. विदर्भ या सारस्वतांच्या भूमीवर प्राचीन काळापासून मौर्यांपासून ते मध्ययुगीन काळातील यादवांपर्यंत अशा सर्वच राजवंशांनी राज्य केले. त्यामध्ये मौर्य, शुंग, सातवाहन, चालुक्य, राष्ट्रकूट, यादव, गोंडराजे, भोसले, निजाम यांचा समावेश होतो. याचा उल्लेख आपणास इतिहासाच्या संदर्भ ग्रंथातील पृष्ठांवर दिसतात. विदर्भाला "विदर्भ" हे नाव विदर्भ नावाच्या प्राचीन काळातील एका राजाच्या नावावरून पडले. हा विदर्भ प्राचीन काळापासून वैभवसंपन्न होता. प्राचीन काळामध्ये आर्यावर्त व दख्खन यांना जोडण्याचे काम विदर्भाने केले. उत्तरेला नर्मदा, पश्चिमेस जळगांव, धुळे, भुसावळ, दक्षिणेस कृष्णा नदी, पूर्वेस कोसल म्हणजे आजचे छत्तीसगड इथपर्यंत पसरलेल्या भागास विदर्भ असे म्हणत. विदर्भाच्या या भौगोलिक सीमांमध्ये निरनिराळ्या कालखंडात बदल होत गेलेत. वर्धा, नागपूर, भंडारा, गडचिरोली, गोंदिया, चंद्रपूर, बुलढाणा, अकोला, वाशिम, यवतमाळ हे आजच्या विदर्भातील जिल्हे म्हणजे विदर्भाचे वैभवच म्हणता येईल. भारताच्या निरनिराळ्या काळातील राजकारण, समाजकारण, अर्थकारण यावर विदर्भाने आपली अमीट छाप सोडलेली आहे. आजच्या विदर्भातील अमरावती जिल्हा हा सांस्कृतिक दृष्ट्या वैभवसंपन्न असून याच जिल्ह्यात आज कौंडण्यपूर ही प्राचीन विदर्भाची राजधानी वसलेली आहे. आजच्या विदर्भातील अशी अनेक स्थान आहेत की, ज्याचा फार मोठे ऐतिहासिक महत्व आहे. त्यात रामटेक, पवनार, सालबर्डी, इ. यातीलच एक म्हणजे





कौंडण्यपूर होय. कौंडण्यपूर या गावाचे नाव जरी उच्चारले तरी निमिषार्धात आपल्या डोळ्यासमोर उभा राहतो तो महाभारताचा काळ.

विदर्भातील अमरावती जिल्ह्यात स्थित असलेले कौंडण्यपूर म्हणजेच प्राचीन काळातील कुंडिण्यपूर हे आता निर्विवाद सिध्द झाले आहे. प्राचीन विदर्भातील अतिशय पुरातन आणि ऐतिहासिक गाव म्हणजे कौंडण्यपूर हे आहे. आज छोटेसे खेडे असले तरी या छोटयाश्या खेड्यातच प्राचीन विदर्भाचा सांस्कृतिकदृष्ट्या समृद्ध असलेला वारसा दडलेला आहे. हे ठिकाण अमरावती आणि वर्धा जिल्हयाच्या सिमोवर असून ते अमरावती जिल्हयात स्थित आहे. प्रसिध्द वरदा (वर्धा) नदीचा तटावर असलेले हे ऐतिहासिक स्थळ, देवस्थान, तीर्थक्षेत्र म्हणून प्रसिध्द आहे, पर्यटन केंद्र म्हणून नावारुपाला येत आहे.

पौराणिक काळातील चार स्त्रियांचे माहेरघर म्हणून कौंडण्यपूरची ख्याती आहे. रघुकुलाचे मुळपुरुष सगरपत्नी केशिनी, श्रीरामचंद्राचे आजोबा अज यांची पत्नी इंदुमती, नल राजाची पत्नी दमयंती, कृष्णपत्नी रुक्मिणी यांचे कौंडण्यपूर हे माहेरघर होते असा उल्लेख मिळतो. म्हणजेच कौंडण्यपूर हे अतिप्राचीन आहे. हे लक्षात येते, कौंडण्यपूरचे अतिप्राचीनत्व लक्षात घेता आणि ऋग्वेद हा भारतातील सर्वात प्राचीन ग्रंथ आहे. हे लक्षात घेतल्यास वेदांमध्ये विदर्भाचा कुठेच उल्लेख नाही या संदर्भात "वन्हाडचा इतिहास या ग्रंथात या. मा. काळे लिहितात, "कुंडीन अथवा कौंडिण्य ऋषीच्या नावावरून या नगरीस कौंडिण्यपूर नाव पडले. या ऋषीच्या उल्लेख बृहदारण्य उपनिषदात येतो, तसेच प्रश्नोपनिषदात विदर्भ देशाच्या भार्गवाचे नाव आले आहे. कुंडिनपूरलाच विदर्भपूर या नावाने संबोधतात असत."

कौंडण्यपूर नावाचे आजचे २०००-२५०० लोकवस्तीचे खेडे आहे आणि भारताच्याच नव्हे तर जगाच्या नकाशावर ते एक पुरातत्वीय स्थळ म्हणून प्रसिध्द आहे. अशा या कौंडण्यपूर बद्दल महाविद्यालयात इतिहास विषयाचे अध्ययन करित असतांना प्राचीन इतिहास जाणून घेण्याची उत्सुकता निर्माण झाली. त्या उत्सुकतेपोटीच अनेक वेळा आषाढ, कार्तिक कौंडण्यपूरच्या इतिहास जाणून घेण्याचा प्रयत्न केला. परंतु कौंडण्यपूर बद्दल प्रचंड उत्सुकता मनात असतांना मी ज्या कला व विज्ञान महाविद्यालय कुन्हा येथे इतिहास विषयाच्या अध्यापनाचे कार्य करित आहे. कुन्हा येथून १० कि.मी. अंतरावर असणारे कौंडण्यपूर मध्ये माझ्या महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या कार्यक्रमा अधिकारी या पदाची जबाबदारी पार पाडत असतांना कौंडण्यपूर येथे महाविद्यालयाचे सतत तिन वर्षे १० दिवसीय शिबीर घेतले. या निवासी शिबीरात मी माझे रासेयो चे कार्य करित असतांना मला या ठिकाणी असणारा वैविध्यपूर्ण भौगोलिक प्रदेश, या ठिकाणी नगरात प्रवेश करतांना दिसणारी पांढरीची टेकाड, आणि विविध मंदिरे यांचे बद्दल अधिक जाणून घेण्याची जिज्ञासा निर्माण झाली, अधिक खोल विचार करित असतांना कळले की, या पांढरीच्या टेकाडांनीच तर अनेक पुरातत्वशास्त्रज्ञांचे लक्ष कौंडण्यपूरकडे वळले कारण जिथे अशी पांढरीची टेकाड आहेत तिथे प्राचीन संस्कृती अस्तित्वात होती. यासंबंधी विवेचन करतांना श्री क्षेत्र कौंडण्यपूर (विदर्भ) काल, आज व उदया या पुस्तकात श्रीपाद केशव चितळे लिहितात, "प्रथमदर्शनी पाहता कौंडण्यपूर मोठे भकास गांव वाटते. कारण येथे पांढरीच्या टेकाड्या सर्वत्र विखुरलेल्या दिसतात. पांढरीची टेकाड गावात असणे याचा स्पष्ट पुरातत्वीय अर्थ आहे की, गांव अत्यंत प्राचीन आहे. अशा प्राचीन टेकाड्या असलेल्या गावात अनेक वर्ष, मानवी वसाहत नांदत होती असा त्याचा अर्थ होतो मानवाच्या दैनिक चहाळामुळे अशा टेकाड्या उत्पन्न होतात. या पांढरीच्या टेकाडाच्या अस्तित्वामुळेच कौंडण्यपूर येथे जागतिक दर्जाचे विस्तृत उत्खनन करण्यात आले."^१





सर्व प्रकारच्या वेगवेगळ्या समाज बांधवांनी बांधलेली मंदिरे व मंदिराचा समूह वर्षा नदीचे विहंगम व देखणे रूप आणि शिलालेख यांचे दर्शन घेता आले. यातीलच एक जमेची बाजू म्हणजे इतिहासतज्ञांनी येथील शिलालेखांचा लावलेला शोध त्याचाही अन्य इतिहासकारांच्या आणि पुरातत्व शास्त्रज्ञांचा लेखणीतून अर्थबोध झाला, तसेच कौंडण्यपूरच्या ग्रामवासी यांचे कडूनही या गावाची माहिती मिळत गेली, तसेच भगवंत श्रीकृष्णांनी येथील राजकन्या रुक्मिणीचे अपहरण केले अशी कथा सुध्दा येथील ग्रामवासियांकडून कळली.

कौंडण्यपूरचा शिलालेख :-

कौंडण्यपूरचे प्राचीनच आज सर्वांनी मान्य केले आहे. कौंडण्यपूरचे पुरातत्वीय महत्व सर्वप्रथम १९२८ मध्ये आत्माराम रावजी देशपांडे यांनी ओळखले व त्यानंतर अनेक पुरातत्वशास्त्रज्ञांचे लक्ष कौंडण्यपूरकडे आकर्षित केले. पूढे १९३६ मध्ये रावबहादूर के.एन. दिक्षित यांनी या ठिकाणी आढळलेल्या पुरावशेषांचा तौलनिक व चिकीत्सक अभ्यास केला. त्यानंतर मोरेश्वर दिक्षित यांनीही अभ्यास केला. १९९५ ते २०००च्या सुमारास कौंडण्यपूर येथील एका शिलालेखाचे अत्यंत काळजीपूर्वक वाचन श्री. श्रीपाद केशव चितळे यांनी केले. यासाठी त्यांना प्रा. डॉ.सुरेश डोळके आणि डॉ.म.रा.जोशी यांचे सहाय्य लाभले. हा शिलालेख देवनागरी लिपीमध्ये तो इ.स.१३ व्या अथवा १४ व्या शतकातील असावा असे मत वरील संशोधकांनी अभ्यासांती दिले आहे. या शिलालेखाबद्दल प्रस्तुत संशोधनात पांढरीच्या टेकाडांकडे वळलो. विचार करणे आवश्यक आहे. शिलालेख त्यावेही देवालयाचा जो परिसर आहे, त्याच्या उत्तरेकडे पायऱ्यांच्या बाह्यभागी विणला होता. आता मात्र तो प्रवेश मार्गावरील भिंतीत चिणून ठेवला आहे. या शिलालेखाच्या ११ ओळी कोरलेल्या आहेत. संत साहित्याचे अभ्यासक डॉ. म.रा.जोशी यांचे मत हा शिलालेख दानपट्टिका (भूमीदान) असावी, तर डॉ. दिक्षित यांचे मत ह्या शिलालेखातील मजकुराचा संबंध तेथील समाधीशी आहे. शिलालेख देवनागरी लिपीत आहे. श्री. चितळे यांनी श्री क्षेत्र कौंडण्यपूर (विदर्भ) काल, आज व उदया या पुस्तकात प्रस्तुत शिलालेख दिला आहे. ती मी जसा हा तसा येथे संदर्भ देत आहे.

“श्री ग ण (ण) शा य न मः ओळ क्र. १
 व्दि ज पा (ळ) यति..... आनंद ओळ क्र. २
 दे व (स्था) नविभूती..... ओळ क्र. ३
 श्री द त्ता () य अत्री प यं त
 ओळ क्र. ४ मु वी अ न्ना सा (ठी) च (श) रण
 ओळ क्र. ५ ख द व व जी चु ची पा ळ
 सांगत (सम्राट) ओळ क्र. ६ क दं वि नि वा सी निरजक्ष .
 ओळ क्र. ७ दी प न स म यी शी ध
 म ओळ क्र. ८ की त र्न (निवर्त (न)
 थळी (स्थळी) मातृपितृ ओळ क्र. ९ पु न्या सा ठी चं न
 द न विजेयेते ओळ क्र.१०”

अर्थात कौंडण्यपूरचा हा ११ ओळींचा मराठी संस्कृत अशा देवनागरी लिपीतील शिलालेख कौंडण्यपूरचा प्राचीनतेवर प्रकाश टाकतो यात असे नमूद आहे की, “शशीपाल नावाच्या सामंताने निर्जला एकादशीच्या उदयापन समयी मातृपितृ पुण्योपचारासाठी जमीन शेतकऱ्यांना दान करण्यासाठी दिली आहे.” असे इतिहास संशोधक श्री.चितळे, डॉ. जोशी आणि डॉ.शेळके यांनी वाचला परंतु हे अंतिम संशोधन नाही, असे आग्रहपूर्वक सांगून त्यामुळे ते नवसंशोधकांना





आवाहन करतात की, या शिलालेखाचे वाचन करून नविन संशोधन इतिहास संशोधकापूढे ठेवावे आणि त्याचे पुनर्लेखन व्हावे असे सांगतात. कौंडण्यपूरचा हा शिलालेख आणि इतर दोन शिलालेख हा खरोखरच आपला सांस्कृतिक ठेवा आहे. इ.स.च्या १३ व्या शतकातील असलेल्या या शिलालेखाची प्राचीनता ७०० वर्षे उरते.

कौंडण्यपूरचे अतिप्राचीनत्व :-

काही संशोधक आणि पुरातत्ववेत्ता अभ्ययनाअंती नगरीची प्राचीनता थेट महाभारत काळापर्यंत व त्या आधीच्या काळापर्यंत नेतांना दिसतात. त्याला कारणही तसेच आहे. म्हणजे हे नगर अतिप्राचीन आहे हे विधान पटवून देणे त्याला वाव आहे. प्रस्तुत संशोधनात यापूर्वी पांढरीच्या टेकाड्यांचा उल्लेख केला आहे. कौंडण्यपुरात प्रवेश करतांना पांढरीच्या टेकाड्या दिसतात त्या मानवी वसाहतीच्या निदर्शक आहे. म्हणूनच तेथे कौंडण्यपूरचे उत्खनन सांस्कृतिक ठेवा म्हणून उत्खनन करण्यात आले. या उत्खननात तांबडी मडकी, त्याचे तुकडे आढळलीत. पुरातत्व शास्त्रज्ञांच्या मते कौंडण्यपूरचा सर्वात प्राचीन थर, महापाषाणयुगीन मानवाचा असला पाहिजे, महापाषाण युग म्हणजे २५०००ते३०००० वर्षापूर्वीचा काळ महापाषाण युगीन मानवी वसाहत विदर्भात आढळलेली आहेत. त्यातीलच एक म्हणजे कौंडण्यपूर होय. कारण कौंडण्यपूरच्या उत्खननातील आढळलेल्या अवशेषांवरून हे सिध्द होते. "कौंडण्यपूरच्या उत्खननाचा थर क्र. ५ ते ८ मध्ये मौर्य काळातील वस्तु आढळून आल्या. या काळातील नाणी, मडकी, मणी, अवजारे, हत्यारे असे सर्व पुराण शेष आढळले. म्हणजे आजपासून २३०० वर्षापूर्वी मौर्य काळात कौंडण्यपुरात मानवी वसाहत होती हे सिध्द झाले. या काळची अनेक मृदभांडी, त्याचे विविध प्रकार उत्खननात आढळते त्यात मातीच्या कळशा, पाणी साठविण्याची मोठी भांडी, गोलबुडाची भांडी, पणत्या (दीप) धान्य संचय कुंभ तोटीची भांडी असे सर्व आढळले."

भाजलेल्या मातीच्या विविध वस्तु, विविध धातुंच्या वस्तु (लोखंडाच्या वस्तु) तांब्याच्या वस्तु, शंखाच्या विविध वस्तु, दगडाच्या वस्तु, धान्याचे पुरावशेष, विविध नाणी, प्राण्याच्या अस्थीचे अवशेष (गायी,मेंढया, बैल, डुक्कर, कुत्री, गाढव, हत्ती, हरिण व कासव यांच्या अस्थी) इ.अवशेष आढळले. सातवाहन कालीन वस्तुही उत्खननात आढळल्या. कौंडण्यपूरच्या विस्तृत उत्खननाचा अहवाल डॉ. मोरेश्वर दीक्षित यांनी लिहिला. त्यांनी पूढाकार घेवून जे उत्खनन केले त्यात विष्णू भित्रे, एम.आर.इनामदार, डी.आर.अमलडी, व्ही.पी.रोडे व डॉ. शहा यांनी सर्वतोपरी मदत केली.

थोडक्यात २००० ते २५०० वर्षांचे कौंडण्यपूर हया गावाचे चित्र उत्खननात स्पष्ट झाले आहे. डॉ. मोरेश्वर दीक्षित यांनी १९६२ साली हे उत्खनन भीम टेकडीवर व गावाच्या दक्षिणेस असलेल्या टेकडीवर केले. या उत्खननात २१ थर सापडले. हे २१ थराचे कौंडण्यपूर उत्खनन म्हणून प्रसिध्द आहे.

कौंडण्यपूरचा इतिहास पाहता गावाच्या प्राचीनतेचे दर्शन आपणास घडते. पौराणिक काळापासून तर मध्ययुगीन काळापर्यंत नगरीचे महत्व पटते. उत्खननात आढळलेल्या अवशेषांवरून कौंडण्यपूरचे अतिप्राचीनत्व लक्षात येते. येथे आढळलेले फार मोठ्या प्रमाणावरील अवशेष हा स्वतंत्र अभ्ययनाचा आणि विस्तृत विषय आहे.

वर्तमान युगातही कौंडण्यपूर हे भाविकांचे श्रध्दास्थान आहे. येथे विठ्ठल- रुक्मिणी मंदीर, सत्यनारायण मंदिर, शिव मंदीर, दत्त मंदीर, हनुमान मंदीर, अंबिका माता मंदीर, विश्वकर्मा मंदीर विविध समाज बांधवांनी बांधलेली मंदीरे, नामदेव मंदीर, विठ्ठल मंदिर, बौध्द विहार आणि इस्कॉन मंदिर International Society for Krishna Consiousness allways या शिवाय मंदिरातील पंचमुखी महादेव, गणेशमूर्ती, हनुमानाची मूर्ती, कालभैरव, सदाराम महाराज समाधी, रामलक्षण,





शेषशायी भगवान या सर्व मूर्ती चित्ताकर्षक आहेत. दरवर्षी आषाढी, कार्तिकी महिन्यात येथे भाविक दर्शनाला येतात. त्यावेळी मोठी यात्रा भरते. त्यात पंचक्रोशीतील हजारो लोकांना रोजगार प्राप्त झालेला दिसतो. एक धार्मिक क्षेत्र म्हणून कौंडण्यपूरचा नावलौकीक असला तरी एक पर्यटन केंद्र म्हणून कौंडण्यपूरचा विकास व्हावा याकरीता या भागाच्या विद्यमान आमदार मा.अॅड. यशोमतीताई ठाकूर यांचे प्रयत्न सुरु आहेत. येथे पायाभूत सुविधा असणे आवश्यक आहे. विदर्भाची प्राचीनता सिध्द करण्याकरीता कौंडण्यपूर ऐतिहासिक स्थळ आपणास मोलाची मदत करते. ही भूमी विदर्भातील अनेक संत महात्म्यांची ही भूमी आहे. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, गाडगे महाराज, अच्युत महाराज, लहानुजी महाराज यांच्या पदस्पर्शाने ही भूमी पुनित झालेली आहे.

प्राचीन काळापासून निरनिराळ्या ग्रंथांमध्ये कौंडण्यपूर (कुंडिनपूर) चा उल्लेख येतो. विव्दानाच्या माहितीनुसार श्रीपाद चितळे लिहितात "कुंडिनपुराइटके विशाल नगर नव्हते. पुढे मध्ययुगातही कुंडिनपूर एक शहर असल्याचे दिसते. पण मुस्लिम कालखंडात मात्र कुंडिनपुरचा कुठेच उल्लेख येत नाही."

समारोप :-

असा हा विदर्भाचा प्राचीन ऐतिहासिक समृद्ध वारसा जतन व संवर्धन करणे क्रमप्राप्त आहे. त्याकरिता कौंडण्यपूरच्या पंचक्रोशीतील लोकांच्या मनामध्ये या भूमिला संवर्धनावढल प्रेम निर्माण आवश्यक आहे, कारण हे गांव दुर्लक्षित आहे.

येथे असणारी विविध समाजबांधवांची मंदिरे हे तर कालवैभव आहेच ! दरवर्षी आषाढी, कार्तिक महिन्यात येथे हजारो यात्रेकरुंची ये-जा असते, परंतु हे क्षेत्र धार्मिक पूण्यक्षेत्रच जर आहेच पण तेच न राहता हे पर्यटनस्थळ होण्याच्या दृष्टीने परिसरामध्ये सौंदर्यीकरण व्हावे, अनेक शाखांच्या अभ्यासाकरिता स्वतंत्र ग्रंथालय उभारण्यात यावे,या बरोबरच ध्यानधारणा कक्ष, धर्मशाळांचे आधुनिकीकरण केल्यास अभ्यासकांची दृष्टी या स्थळाकडे वळेल आणि वर्धा नदीच्या विहंगम पात्रात गत कौंडण्यपूरच्या इतिहासाचे दर्शन होईल व तेव्हाच विदर्भाच्या या प्राचीन राजधानीचा व आजच्या विदर्भाच्या पंढरीचा समृद्ध इतिहासाला खऱ्या अर्थाने उजाळा मिळेल.

निष्कर्ष :-

१. महाराष्ट्रातील एक समृद्ध भौगोलिक व ऐतिहासिक वारसा असणारा प्रदेश म्हणजे विदर्भ होय.
२. प्राचीन काळात आर्यावर्त व दख्खन यांना जोडण्याचे काम विदर्भाचे केल.
३. प्राचीन विदर्भातील सर्वात पुरातन व ऐतिहासिक गांव कौंडण्यपूर होय.
४. कौंडण्यपूरची प्रत्यक्ष दिसणारी पांढरीची टेकाड ही गावाच्या प्राचीनतेची साक्ष देतात.
५. कौंडण्यपूरची येथे आढळलेल्या तिन शिलालेखांपैकी एक शिलालेख इ. सनाच्या तेराव्या व चौदाव्या शतकातील आहे ती दानपत्रिका आहे.
६. कौंडण्यपूरचे उत्खननात विविध धातू, शंख, दगड यापासून बसविलेल्या वस्तु आढळल्यात त्यावरून गावाच्या प्राचीनतेची साक्ष पटते.
७. कौंडण्यपूरची भूमी अनेक संत महात्म्यांच्या पद स्पर्शाने पुनित झालेली भूमी आहे.
८. अतिशय महत्वाचा निष्कर्ष म्हणजे हे खेडे दुर्लक्षित आहे. या गावाचा प्राची समृद्ध इतिहास दृष्टिआड गेलेला दिसतो तो लोकांना नजरेस आणून देणे आवश्यक आहे.
९. एक ऐतिहासिक पर्यटन केंद्र म्हणून या गावाचा विकास होणे आवश्यक आहे.





संदर्भटीपा :-

१. या.मा.काळे, वन्हाडचा इतिहास
२. चितळे श्रीपाद केशव श्री क्षेत्र कौडण्यपूर- काल, आज व उद्या, पृ.क्र.९
३. कित्ता पृ.क्र. ८५
४. श्री क्षेत्र कौडण्यपूर महात्म्य विशेषांक - वर्ष २०१५

संदर्भ ग्रंथसूची :-

१. काळे या.मा. वन्हाडचा इतिहास
२. श्रीपाद केशव चितळे, कौडण्यपूर (विदर्भ) काल, आज व उद्या
३. श्री क्षेत्र कौडण्यपूर महात्म्य विशेषांक २०१५


Principal
Arts & Sci. College
Kurha



Impact
Factor
7.149

ISSN 2349-638x

Peer Reviewed And Indexed

**AAYUSHI
INTERNATIONAL
INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
(AIIRJ)**

Monthly e-Journal

Aug 2021

Address

• Devgiri Nagar, Ambajogai Road, Latur.
• Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
• (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email

• aiirjpramod@gmail.com
• aayushijournal@gmail.com

Website

• www.aiirjournal.com



CHIEF EDITOR - PRAVOD PRAKASHRAO TANDALE

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
1	Dr.Sarala R.Menon	Standardization and Globalization of Communicative Competency of ESL	1 To 4
2	Uttam B. Chougale, Pravin R. Kharade , Hemant V. Chavan, Rajan S. Kamble & Savita R. Dhongade	Synthesis of 1,3-Diaryl Substituted Pyrazole Based Curcuminoids as Potent Antibacterial Agents	5 To 10
3	Ms. Nishi Kumar	The Relationship Between Online Teaching- Learning on The Mental Health of Bachelor of Education Students	11 To 18
4	Dr. Chandrakant S. Duple	Utility of Plyometric Training Method for Improving Explosive Power of Leg and Speed of Hockey Players	19 To 21
5	Mrunal S.Barki	Information Seeking Behaviour Models : An Overview	22 To 26
6	Dr Umesh Rathi	Effect of Aerobic Exercise on The Basket Ball Skills of Basket Ball Players	27 To 28
7	Shital Shivaji Giri	The role of Agriculture in Indian Economy	29 To 30
8	Vd. Rahul Mohan Khurangale	A Comparative Clinical Study of Edagajadi Lepa and Bhallatakadi Lepa in the Management of Dadru W.S.R to Tinea Infection	31 To 34
9	Dr. Chandrakant S. Duple	Utility of Plyometric Training Method for Improving Explosive Power of Leg and Speed of Hockey Players	35 To 37
10	Sudharkar Balu Chavan	Women Entrepreneurship Development in 21st Century in India	38 To 40
11	Dr. Pachling Somnath Kishanrao	The Role of Newspapers in Student's Life - Special Reference to Nanded City	41 To 43
12	Dr.Rajani Arunsaheb Deshmukh	A Study of Retail Market and Analysis of Consumers Buying Behaviour in Malls:With Reference to Aurangabad City	44 To 47
13	Pandit T. Kadam & Dr. Balaji G. Girgaonkar	Scheduled Tribe Pardhi Children and Their Educational Accessibility With Special Reference to Socio-Economic Status in Ahmednagar District	48 To 51
14	Dr. K. M. Desai	A Sociological Study of Marginal Farmers in Kolhapur District	52 To 54



Effect of Aerobic Exercise on The Basket Ball Skills of Basket Ball Players

Dr Umesh Rathil

M.P.Ed, Ph D, Arts and Science College,
Kurha, Dist. Amravati**Abstract:-**

Scholar being a basket player of university standard decided to conduct the study on the basket ball skill of the basket ball player the scholar selected the aerobic exercises to see the effect on basket ball skills of the players. The scholar decided to see the effect on basket ball skills of the players. The scholar decided to see. The effect of aerobic exercises on Johnson Basket ball Skills. The basket ball skill are i) throw for accuracy ii) Field goal speed and iii) Ball Dribbling test. After the administration of aerobic training on 30 basketball players it was found there is positive significant effect on basketball skills of basketball players

Statement of the Problem :

The scholar selected the problem stated as "Effect of Aerobic Exercises on Basketball Skills of baskets ball players"

Selection of the Subject :

The scholar selected 30 basket ball players, who represented intercollegiate tournaments and of the age 18 to 25 years.

Selection of Aerobic Training Exercises :**Aerobic exercises :**

1) Brisk walking 1 Kilometer ii) Fast Running for 100 meters iii) Ropes kipping 50 times iv) Stair climbing 10 stairs. 5 times, These aerobic exercises are designed by the scholar for the players. The aerobic exercise training is given to the 30 player for 6 weeks duration, 6 days week daily from 7:30 am to 8:30 am.

Collection of Data :

The scholar conducted the Johnson Basketball Skills tests before the starting of aerobic exercise and collected the data. After finishing the 6 weeks aerobic exercise again the scholar collected the scores of Johnson basket ball skill tests data. Table were prepared for statistic analysis.

The tables indicate the means and standard deviation of Johnson Basket ball Skill test. Table number 1 indicates the means and standard deviations of Johnson Basket Ball skills.

Table No. 1 :- The means and standard deviations of basket ball skill pretest score.

Sr. No.	Basket Ball Skills	Mean	Sd.
1	Field goal speed	5.8	2.0
2	Throw for Accuracy	20.3	4.9
3	Dribbling	5.5	2.02

Source : From the pretest scores.

Discussion :-

The above table number one indicates the mean and standard deviation of field goal speed are 5.8 and 2.0 respectively the mean and standard deviation of throw for accuracy skill are 20.3 and 4.9 respectively. The mean and standard deviation of dribbling Skill are 5.5 and 2.02 respectively.

After 6 weeks aerobic training of basketball players again the scholar conducted Johnson basket ball skill tests of basket ball players and calculated means and standard deviation of the scores. Which are given in table number two below.

Table No. 2 :- The means and standard deviations of Johnson basket ball skill pretest scores.

Sr. No.	Skills	Mean	Sd.
1	Field goal speed	7.6	1.0
2	Throw for Accuracy test	24.0	3.8
3	Dribbling test	7.0	1.58

Source : From the post test scores of Johnson Basket Ball Skill Test.

Discussion :-

The above table number two indicate the mean and standard deviation of field goal speed test are 7.6 and 1.0 respectively. The mean and standard deviation of throw for accuracy 24.0 and 3.4 respectively. The mean and standard deviation of Dribbling test are 7.0 and 1.58 respectively.

To see the effect of aerobic exercises on the basket ball skills. The scholar calculated 't' value between the pre test means and standard deviation and post tests means and standard deviation which are given below in the table number three.

Table No.3. Post test and pretest means and standard deviations of Johnson Basket ball skill tests & calculated 't' value and tabulated 't' value

Sr. No	Basket Ball Skills	Post Test		Pre Test		Calculated Tab.	
		mn	sd	mn	st	't'	Tab 't'
1	Field goal speed	7.6	1.0	5.8	2.0	4.5	2.75 at 0.01 degree of freedom & 29 level of
2	Throw for Accuracy test	24.0	3.8	20.3	4.9	3.21	
3	Dribbling test	7.0	1.58	5.5	2.02	3.14	

Source : From the post test and pretest mean and standard deviations scores calculated 't' value and tabulated 't' value

Discussion :-

The above table number three indicates the means and standard deviations of post test and pre test scores of basket ball skills, and the calculated 't' values and tabulated 't' value.

The calculated 't' value of field goal speed. is 4.5 at the degree of freedom 29; level of significance 0.01 : where was the tabulate 't' value is 2.75 at level of significance 0.01 and degree of freedom 29 . The calculate 't' value of throw for accuracy skill is 3.2 and calculated 't' value of Dribbling is 3.14 at degree of freedom 29 and 0.01 level of significance and

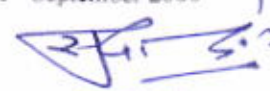
tabulated t values is 2.75 at 29 degree of freedom and 0.01 level of significance, which proved that there is positive significant effect of aerobic exercises on basketball skills. Hence The hypothesis is accepted.

Hence the scholar concluded that the basket ball player must adopt the aerobic exercises to improve the skills of basketball.

References

1. **Karmajit Singh** "Physical Fitness of Hockey Players" NIPER, Society for the National Institute of Physical Education and Sports Journal (Vol. : 1. No. 1, January 1978) : 30,31
2. **Subir Debnath, R.N. Dey.** "Physiological Study of Sportsman with Different Aerobic capacities," The Scientific Journal. (Vol. 23 April, 2000) : 33
3. **Louis Bherer, Kirk I. Erickson, and Teresa Liu-Ambrose** A Review of the Effects of Physical Activity and Exercise on Cognitive and Brain Functions in Older Adults" Journal of Aging Research Volume 2013 (2013), Article ID 657508, 8 pages
4. **Krishna Kant** "The Effect of Six Weeks of Brisk Walking on Aerobic/Cardiovascular Function of Sedentary College Students" Indian journal of applied research Volume : 4 | Issue : 9 | September 2014 | ISSN - 2249-555X
5. **Tiago V. Barreira, David Rowe, Minsoo Kang** "Parameters of walking and jogging in healthy young adults" ABSTRACT Int J Exerc Sci 3(1) 4-13, 2010
6. **F.M. Inpellizzeri et.al** Effect of Plyometric training on sand versus grass on muscle soreness and jumping and sprinting ability in soccer players ,study conducted in neuromuscular laboratory, schutthess clinic |Lengghalde2,8008Zurich Switzerland
7. **Ademola Olasupo Abbas** "Comparative effect of three models of plyometric training on leg muscle strength of university male students" Ph.D. Study university of Ibadan Nigeria
8. **Michel G Miller,** "The effect of A 6 week plyometric Training programme on Agility", published online 1st September 2006




 Principal
 Arts & Sci. College
 Kurha

2021-22

ISSN: 2394 5303

Impact
Factor
7.891(IJIF)

Printing Area[®]

Peer-Reviewed International Journal

October 2021

Issue-81, Vol-05

01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages
October 2021, Issue-81, Vol-05

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

www.vidyawarta.com



INDEX

- 01) Projection of Women Characters in Karnad's 'Yayati'
Dr. Dahale N. M., Tq. Dist. Aurangabad ||10
- 02) EFFECT OF 12 WEEK ASANA AND MEDITATION PRACTICES ON PSYCHOLOGICAL ...
Jagadeesh S Gasti, Belagavi, Karnataka ||13
- 03) Witness Protection and Farce of the Criminal Justice system in India: An ...
Tarun Goyal, Sri Ganganagar (Raj) ||16
- 04) SERVICE QUALITY OF STAFF TRAINING IN HOSPITALITY SECTOR
I.M.Karthikeyan & Dr.K.Raja Alias Pranmalai, Dindugal Dist. ||22
- 05) Genetic Assessment of Chickpea (Cicer Arietinum L.) Germplasm
Ganesh Koparkar, Dr. Kevin Gawali, Dr. Ashish Sarda,
Dr. Umesh Shinde & Amol Nagmote, Saikheda, Madhya Pradesh ||30
- 06) A Comparative Study of the Political Thought of Plato and Aristotle
Dr. Vibha P. Deshpande, Kurha ||35
- 07) A Comparative Study on Cognitive errors of Individual with Obsessive-...
Ms. Richa Ojha & Mr. Sachin Kumar Gupta, Mathura, Uttar Pradesh ||39
- 08) Rabindranath Tagore's Chitra – An Epitome of empowered Women, love ...
Smt. Patil Jayshree Ramdas, Tq. Dist. Aurangabad ||46
- 09) GST: Towards Growth of International Trade
Dr. Ashok B.Pawar, Sillod ||49
- 10) Genetic diversity analysis between different varieties of chickpea in ...
Kishan Shahare, Dr. Kevin Gawali, Dr. Umesh Shinde,
Dr. Ashish Sarda & Prof. Amol Nagmote, Saikheda, Madhya Pradesh ||52
- 11) Effect of Heat, Drought on Growth and Yield of Chickpea (Cicer Arietinum ...
Himanshu Sontakke, Dr. Kevin Gawali, Dr. Umesh Shinde
& Amol Nagmote, Saikheda, Madhya Pradesh ||57
- 12) DETERMINATION OF EROSION SURFACE OF AURANGA BASIN, JHARKHAND ...
Dr. RAMCHET SINGH YADAV, GORAKHPUR (U.P.) ||62



A Comparative Study of the Political Thought of Plato and Aristotle

Dr. Vibha P. Deshpande

Arts and Science College, Kurha

Introduction:

Plato and Aristotle are two of the most significant figures in ancient Greek philosophy, and their political thought has had a profound impact on Western political theory. While both philosophers sought to explore and address the challenges of governance and the ideal state, they arrived at distinct conclusions based on their respective philosophical foundations. This comparative study will examine the political thought of Plato and Aristotle, analyzing their views on the nature of the state, the role of the ruler, the structure of government, and their vision of the ideal polity.

I. Nature of the State:

A. Plato's Political Thought: Plato's political thought is expounded in his seminal work, "The Republic." In this dialogue, he presents an allegory of the ship of state, where the ship represents the state and the crew symbolizes the citizens. According to Plato, the state should be guided by a philosopher-king, someone who possesses wisdom, knowledge of the Forms, and a deep understanding of justice.

Plato argues that the ideal state is one where reason governs, and the rulers are philosopher-kings who lead based on their knowledge of the Good. He emphasizes the importance of having the ruling class share in common and live communally to ensure that they prioritize the common good over their individual

interests.

B. Aristotle's Political Thought: Aristotle's political thought is presented in his work, "Politics." Unlike Plato, Aristotle takes a more empirical approach and examines existing political systems to determine the best form of government. He believes that the state is a natural institution that arises from the basic human need for cooperation and the pursuit of the good life. Aristotle rejects Plato's idea of philosopher-kings, arguing that no one individual or class is inherently fit to rule. Instead, he proposes a polity, a mixed form of government that combines elements of monarchy, aristocracy, and democracy. In a polity, the middle class plays a crucial role in maintaining stability, and citizens participate in governance based on their abilities and virtues.

II. Role of the Ruler:

A. Plato's View on Rulers: For Plato, the ruler's role is to act as a philosopher-king who possesses wisdom and knowledge of the Forms. Philosophers, in his view, are best suited to govern because they pursue truth and possess a genuine concern for the well-being of the state and its citizens. According to Plato, rulers must receive rigorous education and training in philosophy to develop the virtues necessary for just rule.

Plato believes that philosopher-kings must rule with absolute authority and wisdom. They are not motivated by personal gain or self-interest but instead seek the common good of the state and its citizens. Their rule is based on reason and the pursuit of justice, ensuring that the state functions harmoniously.

B. Aristotle's View on Rulers: Aristotle has a more pragmatic view of rulership. He believes that the best rulers are those who possess practical wisdom (phronesis) and understand the needs and desires of the citizens. Unlike Plato's philosopher-kings, Aristotle argues that rulers should be chosen from among the middle class, as they are more likely to govern with modera-



tion and balance.

Aristotle acknowledges that no one individual or group is perfect, and different forms of government are appropriate for different circumstances. He emphasizes the importance of the ruler's virtue and character in maintaining the stability and success of the state. According to Aristotle, good rulers must strive for the common good, listen to the concerns of the citizens, and rule in a way that benefits the whole community.

III. Structure of Government:

A. Plato's Ideal State: Plato's ideal state is characterized by a strict hierarchical structure, where each citizen fulfills a specific role based on their natural abilities and aptitudes. In "The Republic," he outlines a tripartite division of society, consisting of rulers (philosopher-kings), guardians (warriors), and producers (craftsmen and laborers).

The philosopher-kings possess wisdom and knowledge of the Forms, ensuring that the state is ruled by reason. The guardians, trained from a young age to be loyal and courageous, protect the state and maintain order. The producers engage in productive labor to meet the material needs of the society.

Plato's ideal state is communistic, with the ruling class living a simple and austere life, devoid of private property and family ties. The guardians and producers share in common and raise children collectively to avoid the influence of selfish interests.

B. Aristotle's Mixed Government: Aristotle's political thought advocates for a mixed government, known as a polity. He criticizes both extremes of pure democracy and oligarchy, arguing that the best form of government is one that combines elements of monarchy, aristocracy, and democracy.

Aristotle's polity is characterized by a middle-class emphasis, where the middle-class citizens have significant influence and power. He believes that a strong middle class is essen-

tial for stability and prevents the concentration of power in the hands of a select few.

In contrast to Plato's communistic vision, Aristotle supports the existence of private property and family units. He recognizes that these institutions play a significant role in fostering individual responsibility, motivation, and a sense of belonging within the state.

IV. Vision of the Ideal Polity:

A. Plato's Utopian Ideal: Plato's vision of the ideal polity is rooted in the pursuit of justice and the common good. In his utopian state, the philosopher-kings lead with wisdom, ruling for the benefit of all citizens. The society is characterized by harmony, virtue, and the absence of conflict.

Plato's ideal state is an organic whole, where each individual contributes to the well-being of the whole. He envisions a society where citizens strive for knowledge and virtue, recognizing that their ultimate purpose is to align with the realm of Forms and the eternal truths.

B. Aristotle's Pragmatic Ideal: Aristotle's vision of the ideal polity is pragmatic and flexible. He acknowledges that different forms of government are appropriate for different circumstances and that no form of government is inherently perfect.

Aristotle's ideal state is characterized by the pursuit of eudaimonia, the flourishing life. Citizens strive to develop their virtues and lead a life of contemplation and moral excellence. The polity is governed by laws that aim to promote the common good, and rulers act in the interest of the community.

Unlike Plato's utopian vision, Aristotle recognizes the inevitability of conflict and disagreement in politics. He believes that the goal of the state should be to foster a stable and just society that enables citizens to pursue the good life while mitigating conflicts and promoting harmony.

V. Concept of Justice:



A. Plato's Notion of Justice: In "The Republic," Plato extensively discusses the concept of justice. For him, justice is a fundamental virtue that encompasses the harmonious functioning of the soul and the state. In the ideal state, justice is achieved when each class performs its designated role without encroaching on the functions of others. This idea is reflected in Plato's tripartite division of society, where the rulers govern with reason, the guardians protect with courage, and the producers work with temperance. Plato identifies three components of the soul - reason, spirit (emotions), and desire. Justice in the individual is attained when reason governs, and each part of the soul fulfills its appropriate role. Similarly, justice in the state is achieved when the philosopher-kings (rational rulers) rule with wisdom, the guardians (spirited class) protect the state, and the producers (appetitive class) perform their economic tasks.

B. Aristotle's Understanding of Justice: Aristotle, too, places great importance on justice but presents a different view from Plato. For Aristotle, justice is a virtue that involves giving each person what they deserve or are entitled to. He distinguishes between distributive justice and corrective justice.

Distributive justice concerns the fair distribution of resources, honors, and responsibilities in the state. In an ideal polity, distributive justice is achieved when people receive benefits according to their merit and contribution to society. This notion aligns with Aristotle's belief in the importance of the middle class, as they are essential for a balanced and just distribution of resources.

Corrective justice, on the other hand, deals with rectifying disputes and breaches of justice through legal means. Aristotle stresses the importance of impartial and fair judgments to maintain social harmony and the rule of law.

VI. Education and Role of Literature:

A. Plato's Views on Education: Education plays a vital role in Plato's ideal state. In "The Republic,"

he proposes a rigorous educational system that aims to mold individuals into virtuous and enlightened citizens. The primary purpose of education is to prepare the future rulers (philosopher-kings) to govern the state with wisdom and virtue.

Plato's educational curriculum includes a period of physical training to develop the guardian's bodies, followed by a lengthy period of intellectual and moral education. The guardians are exposed to various subjects, but the emphasis is on mathematics, dialectics, and the study of the Forms. Plato believes that exposing individuals to abstract and eternal truths will prepare them for rational and just rule.

B. Aristotle's Views on Education: Aristotle also stresses the importance of education in shaping virtuous citizens, but his approach is more pragmatic and balanced than Plato's. Aristotle believes that education should encompass both theoretical and practical aspects.

Theoretical education involves the pursuit of knowledge, including philosophy, mathematics, and natural sciences. Practical education, on the other hand, focuses on the development of moral virtues and practical wisdom. Aristotle argues that a well-rounded education enables individuals to lead the good life and participate meaningfully in the polity.

In contrast to Plato's exclusive focus on philosopher-kings, Aristotle advocates for a broader education that benefits all citizens. He sees education as the means to cultivate moral character and foster citizens' active engagement in politics.

VII. Relationship Between Individual and State:

A. Plato's Conception of the Individual-State Relationship: In Plato's ideal state, the individual's well-being is inextricably linked to the well-being of the state. He contends that a just individual possesses a harmonious soul, where reason governs emotions and desires. Likewise, a just state functions smoothly when



its three classes (rulers, guardians, and producers) cooperate in fulfilling their designated roles. Plato's communistic vision extends to the individual, where private property and family ties are eliminated to prevent conflicts of interest. In the absence of individual possessions, citizens focus on the common good, and the state ensures everyone's material needs are met.

B. Aristotle's Conception of the Individual-State Relationship: Aristotle adopts a more nuanced approach to the relationship between the individual and the state. He recognizes the importance of both the individual and the community in a polity.

Aristotle contends that individuals are inherently social beings, and their flourishing depends on participating in the community. However, he also acknowledges the significance of individual rights, private property, and family ties. Aristotle's political thought prioritizes the happiness and fulfillment of individual citizens within the context of a well-organized polity.

Conclusion:

As a result, political philosophy was greatly influenced by the work of Plato and Aristotle, who were both influential intellectuals. They came to different conclusions based on their respective philosophies, although having some of the same concerns about government and the ideal state. The reign of philosopher-kings and a rigid hierarchical structure were at the heart of Plato's political philosophy, which placed a strong emphasis on the quest for knowledge of the Forms and wisdom. As opposed to this, Aristotle promoted a mixed system of government and stressed the value of practical judgment and middle-class participation. The theories of both thinkers have influenced Western political philosophy, and their concepts are still being researched and discussed today.

We have examined the political thought of Plato and Aristotle, concentrating on their perceptions of the state, the function of the ruler,

the framework of government, their ideal polities, the idea of justice, education, and the relationship between the individual and the state. Plato's utopian conception of an enlightened society ruled by philosopher-kings, in which the welfare of the individual is entwined with the welfare of the community, serves as the defining feature of his political philosophy. The pragmatic political philosophy of Aristotle, on the other hand, places a strong emphasis on the necessity of a mixed government, the participation of the middle class, and a well-rounded education that fosters moral character. Both philosophers have left behind enduring legacies that have influenced ideas of justice, government, and the ideal state in Western political philosophy.

□□□



Principal
Arts & Sci. College
Kurha

Impact Factor 5.455
www.sjifactor.com

p-ISSN 2349-9370
e-ISSN 2582-4848

Vol. 8 Issue 2
Oct. 2021
Regular Issue 2

2021-22

Research Journal of India

Print and Online
www.researchjournal.net.in
www.indiramahavidyalaya.com

Peer Reviewed Multi-Disciplinary
Annual National Indexed Research Journal
Published as per UGC (India) Guidelines

Published By
DBMRC
INDIRA MAHAVIDYALAYA
KALAMB, DISTT. YAVATMAL, MAHARASHTRA 445 401 (INDIA)

Index

	From the Bench of Editor	Dr. Pavan Mandavkar	2
	Index		3
1	Homoeopathic Medicines Are Effective In Reducing Pain In Terms Of Intensity, Frequency And Duration Of Headache Thus Reducing Disability Due To Migraine: A Case Series	Mita Gharte Gayatri Nimbhore Kamlesh Bagmar Vishal Nimbhore Subhash Yadav	4-11
2	Understanding the Psoric Manifestation of Drugs illustrated by Herbert A. Roberts in the Principles and Art of Cure by Homoeopathy: A Literature review	Dr. Kamlesh Bagmar ¹ Shivani S. Patil ²	12-18
3	Study of Various Constitutions in Females from Murphy's Repertory	Sharmila Ashim Roy Gayatri Nimbhore	19-22
4	EFFECT OF NATRUM MURIATICUM 6X IN ANAEMIC FEMALES OF REPRODUCTIVE AGE GROUP FROM 18 TO 45 YEARS: A PROSPECTIVE INTERVENTIONAL STUDY	Smitha R. Nair Varsha U. Dharane Dhanashree Chaudhari	23-29
5	A Correlational Study of Teacher Educators' Stress, Self-efficacy and Work Engagement	Dr. S. D. Patkar	30-35
6	Second-Generation Cements for Electromagnetic Radiation Shielding Application	Dr. Kailash Nemade	36-38
7	संत तुकारामांच्या अभंगातील निसर्गविषयक सुभाषिते	प्रा. बापूराव सहदेव डोंगरे	39-42
8	असहकार चळवळीतील पार्वतीबाई पटवर्धनांचे कार्य	प्रा.डॉ. आर.यु. हिरे	43-44
9	आदिवासी गोंडी दंडार	प्रा. नितीन जगदिश टेकाम	45-47
10	उ.र. गिरी यांची भावकविता	डॉ. गजानन भाऊराव घोंगटे	48-51
11	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांनी मांडलेला प्रयत्नवाद	प्रा.विलास शालिग्रामजी गांजरे	52-54
12	जागतिककरणाचा ग्रामीण समाजावर पडलेला प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा. डॉ. सुजाता रामदासजी नाईक	55-58
13	महदंबेच्या धवळ्यांचे स्वरूप व चिकित्सा	प्रा. डॉ. रमेश पोळ	59-63
14	समाज सुधारकांचे शिक्षणविषयक विचार	प्रा.डॉ. नरेंद्र ठाकरे	64-67
15	महात्मा गांधीच्या दृष्टिकोनातील ग्रामस्वराज्य संकल्पना	प्रा. डॉ. अविनाश मेत्राम	68-70
16	डॉ. विजया राजाध्यक्ष यांच्या कथेतील स्त्री व्यक्तिरेखा	डॉ. अन्नपूर्णा अजाबराव चौधरी	71-72
17	ज्ञानदेवे रचिला पाया । तुका झालासे कळस।	डॉ. स्मिता म. जाधव	73-77
18	संज्ञाप्रवाह व कानेटकरांचे कथात्मक साहित्य	डॉ. गजानन विष्णू लोंढे	78-82
19	डॉ. संजय ढोले यांच्या विज्ञान कथा - गाव विकासाच्या प्रेरक	प्रा. डॉ. माधव कौतिक कदम	83-85
20	पश्चिम विदर्भातील स्वदेशी आंदोलन	डॉ. प्रदिप शा. ढोले	86-89
21	लोक साहित्य : लोकवाङ्मय उखाणे	प्रा. रेखा व्ही. इंगोले	90-93
22	मध्ययुगीन मराठी संत कवयित्रींचे जीवन आणि कार्य	प्रा. डॉ. मीनाक्षी रा. देव	94-97
23	'जिप्सी' या काव्यसंग्रहामधून व्यक्त होणारे निसर्ग चित्रण	प्रा. डॉ. लालबा दुमटकर	98-100
24	महाराष्ट्राचा 'महार'	डॉ. मृदुला निळकंठ रायपुरे	101-104

ज्ञानदेवे रचिला पाया । तुका झालासे कळस ।

डॉ. स्मिता म. जाधव

कला व विज्ञान महाविद्यालय, कुर्हा, जि.अमरावती, महाराष्ट्र (India)
Email: smitamohod15@gmail.com Mob.No.: 9764291038, 8208865157

गोपवारा:-

महाराष्ट्र या संताच्या भूमीत जे विविध धर्मसंप्रदाय उदयाला आलेत त्यातील एक संप्रदाय म्हणजे वारकरी संप्रदाय होय. या संप्रदायात संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वरंपासून तर तुकोबारायांपर्यंतची एक फार मोठी उज्वल संतपरंपरा उदयाला आली. या संप्रदायाची तात्विक मांडणी संत ज्ञानेश्वरानी केली. त्यांनी संस्कृत भाषेवर प्रभूत्व असूनही जनसामान्यांना कळेल अशा मायमराठीत विविध साहित्य रचले. त्यांनी लिहिलेले साहित्य अमर साहित्य आहे. त्यांच्या समकालीन असणारे संत नामदेव महाराज यांनी वारकरी संप्रदायाच्या तत्वज्ञानाचा सर्वत्र प्रसार केला.

संत एकनाथांनी आपले साहित्य मराठीत लिहून प्रपंच आणि परमार्थ यांची सांगड घालून जीवन जगण्याचा अमूल्य संदेश लोकांना दिला. याच संत परंपरेत संत तुकाराम महाराजांचे नाव प्रकर्षाने घ्यावे लागेल त्यांनी लिहिलेली अभंगगाथा आजही लोकांच्या ओठावर आहे. याशिवाय संत सेना न्हावी, नरहरी सोनार, संत जनाबाई, संत चोखामेळ, संत सावता माळी इ.अनेक संतांचा नामोल्लेख करवा लागेल. या सर्वच संतांनी उक्ती आणि कृती याचा समन्वय साधून लोकांना उपदेश केला. राजाश्रयाची आस न बाळगता कार्य करणाऱ्या संप्रदायाने लोकांना ईश्वर भक्तीचा सोपा आणि सुगम मार्ग सांगितला. वारकरी संप्रदायातील संतांनी लिहिलेले साहित्य मराठी सारस्वताचे अनमोल लेणे आहे.

बीजशब्द

संत, वारकरी, संप्रदाय, महाराष्ट्र, भक्ती, विठ्ठल, अभंग, मराठी, संस्कृत, गुरुपरंपरा, कुलपरंपरा, शिष्य, साहित्य, पंढरीची वारी, सगुण, निर्गुण, ज्ञानेश्वरी

प्रस्तावना :-

महाराष्ट्र ही संताची पूण्यभूमी आहे. या भूमीत फार मोठी संतपरंपरा उदयाला आली. संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वरंपासून तर संत तुकोबारायांपर्यंत असे महान संत या भूमीत होवून गेले. या सर्व संतांनी समाजजीवनातील परिस्थितीचा वेध घेवून प्रबोधन केले. अभंग, कीर्तन, प्रवचन, गीते, भारुडे, गौळणी यातून लोकांची आध्यात्मिक जडणघडण करीत असतांनाच लोकांना सामाजिक एकात्मतेचा संदेश दिलाच पण त्याचबरोबर भक्तीमार्ग दाखविला, लोकांना परमार्थाची शिकवण देवून त्याचेतील पुरुषार्थ जागवण्याचे अमूल्य कार्य संतांनी केले. महाराष्ट्रामध्ये नाथ महानुभाव, दत्त, रामदासी, सुफी आणि वारकरी हे विविध संप्रदाय दिसून येतात. यातील सर्व संप्रदायांतील संतमहात्म्यांनी लोकजागृती घडवून आणली आणि लोकांमध्ये आत्मसन्मान आणि स्वाभिमान निर्माण केला. या सर्व संप्रदायातील संतांचे तत्वज्ञानाबाबत काही प्रमाणात बराच फरक असला तरी त्यांचे ध्येय मात्र समान होते ते म्हणजे अखिल मानवजातीचे कल्याण साधणे हे होय.

या सर्व संप्रदायांमध्ये एक अत्यंत प्रभावशाली व लोकप्रिय भक्ती संप्रदाय म्हणजे वारकरी संप्रदाय (माळकरी संप्रदाय) होय. वारकरी संप्रदायातील संतांनी आपल्या कार्यकतृत्वाद्वारे महाराष्ट्रभूमीला अलंकृत केले. संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वरंपासून संत तुकोबारायांपर्यंत ही उज्वल परंपरा दिसून येते. मराठी सारस्वताचे दालन संत साहित्याने समृद्ध केले. त्यांनी आपले साहित्य हे लोकांना समजेल आणि रुचेल अशा मायमराठीत लिहिले. भक्ती, वैराग्य, तत्वज्ञान, नीती, सदाचरण, विश्वकल्याण या विषयांना त्यांनी आपल्या साहित्यात प्रामुख्याने स्थान दिले.

चैतन्याचा महास्त्रोत संत ज्ञानेश्वर :-

वारकरी हा संप्रदाय नेमका केव्हा उगमपावला हे निश्चीतपणे जरी सांगता येत नाही. संत बहिणाबाई म्हणतात. शसंतकृपा जाली । इमारत फळ्य आली श या अभंगात लिहितात.

ज्ञानदेवे रचिला पाया । उभारिले देवाला

नामा तयाचा किंकर । तेणे रचिले ते आवार

जनार्दन एकनाथ । खांब दिधला भागवत

तुका झालासे कळस । भजन कर सावकाश ८



यावरून वारकरी संप्रदायाचा पाया संत ज्ञानेश्वरांनी रचला असे म्हटले जाते. तथापि वारी करणारा या अर्थाने वारकरी हा शब्द वापरला जाते. वारी म्हणजे नियमित फेरी, येझार, यात्रा म्हणजेच न चुकता अंगिकारलेले व्रत धारण करतो, तो म्हणजे वारकरी. वारकरी संप्रदाय म्हणजे पंढरपूरच्या विठोबाशी संबंधित असलेला संप्रदाय आपल्या उपास्य देवतेच्या वारीला या संप्रदायाने जे महत्व दिले ते इतर कोणत्याच पंथाने दिले नाही. ही बाब अत्यंत उल्लेखनीय आहे.

संत ज्ञानेश्वरांचे वडील विठ्ठलपंत बरीच वर्षे पंढरीची पायी वारी करीत असत, म्हणजे संत ज्ञानेश्वरांपूर्वीही वारकरी संप्रदाय अस्तित्वात होता आणि त्याकरिताच पंढरपुरचे देवस्थान केव्हापासून अस्तित्वात आले याचा निश्चित निर्णय होऊ शकला तर ती बाब वारकरी संप्रदायाचा आरंभाचा गड निश्चित करण्यास सहाय्यभूत होऊ शकेल. देवगिरीचा राजा श्रीरामदेवराय यादव या करणाधिप हेमाद्री (हेमाडपंत) 'यांची चतुर्वर्ग चिंतामणी' या ग्रंथात पांडुरंग महात्म्यावरील श्लोक दिला आहे. हा ग्रंथ त्यांनी इ.स. १२६० ते १२७० च्या दरम्यान लिहिला आहे आणि म्हणूनच या ग्रंथाचा आधार घेवून श्री.म.ग.काणे धर्मशास्त्राचा इतिहास खंड ४ था यात लिहितात, "१२६० पूर्वी अनेक शतके पंढरपूरचा तीर्थमहिमा गाजत होता आणि भक्त पुंडलिकाची कथा प्रसिध्द होती. हयावरून हे मंदीर फार पुरातन असले पाहिजे आणि वारकरी पंथही बराच प्राचीन असला पाहिजे असा निष्कर्ष निघतो या पार्श्वभूमीवर ज्ञानेश्वर रचिला पाया" या ओळीचा अर्थ ज्ञानेश्वरांनी वारकरी संप्रदायाचा पाया घातला. हयाचा अर्थ हया संप्रदायाला अध्यात्मनिष्ठ मानवतावादाचे अधिष्ठान त्यांनी प्राप्त करून दिले."

दार्शनिक साक्षात्कारी संत एक श्रेष्ठ प्रतिभाव व सिध्दहस्त महाकवी, संतकवी आत्मानुभवी योगी, श्रेष्ठ तत्वज्ञ महाराष्ट्रातील भागवत धर्माचे प्रवर्तक, पारमार्थिक दिशादर्शक, क्रांतदर्शी समाजसुधारक असे श्रेष्ठ व्यक्तिमत्व म्हणजे संत ज्ञानेश्वर होत. संत ज्ञानेश्वरांनी वारकरी संप्रदायाला तात्विक अधिष्ठान दिले ते कालपरंपरेने पंढरीची वारी करणाऱ्या वंशात जन्माला आहे म्हणून वैष्णव होते आणि म्हणूनच ज्ञानेश्वरांना वारकरी संप्रदायात संस्थापकाचा मान दिला जातो. संत ज्ञानेश्वरांची गुरुपरंपरा ही नाथपंथीय होती. त्यांचे गुरु त्यांचे जेष्ठ बंधू श्री निवृत्तीनाथ होते. त्यामुळे नाथपंथाचा समृद्ध तत्वज्ञानाचा वारसा त्यांना प्राप्त होतो आणि याच संस्कारातून त्यांचा जीवनविषयक दृष्टीकोन निर्माण झाला होता निवृत्तीनाथाकडून संत ज्ञानेश्वरांना नाथ संप्रदायाचा अनुग्रह झाल्याने ते गुरुपरंपरेने शैव आहेत. पुढे वारकरी संप्रदायाचा त्यांनी जो तात्वीक पाया घातला त्यामुळे ते अखिल जगाचे माऊली बनले. संत "संत नामदेवांनी त्यांना ज्ञानराज योग्यांची माऊली" असा भाव प्रकट केला त्यांच्या समाधीप्रसंगी "नामा म्हणे अवा लोपला दिनकर । बाप ज्ञानेश्वर समाधिस्था"। असा आर्त टाहो फोडला आणि संत ज्ञानेश्वर सर्वांचेच मायबाप झाले. संत ज्ञानेश्वरांच्या रुपाने वारकरी संप्रदायाला जणू चैतन्याचा महास्रोत मिळाला. ज्ञानेश्वरांना त्यांच्या मातापित्यांना व बहीण भावंडांना समाजाकडून असहय जाच सहन करावा लागला जणू तो त्यांचे विषाचा पेल पिल्याप्रमाणेच होता. समाजाने केलेली निंदनालस्ती किती भयानक असू शकते याचा स्वानुभव त्यांनी घेतलेला होता. त्याचाच परिणाम त्यांच्या मातापित्यांनी केलेला आत्मत्याग होय. तरीही समाजाकडून छळ सुरुच राहिला पण तरीही ते शांतचित्त होते. अशावेळी निवृत्तीनाथ सोपानदव, ज्ञानदेव आणि मुक्ताई यांचे मन अंतर्बाह्य उजळून निघाले आणि चौपेही समस्त लोकांकरीता दीपस्तंभ बनले त्यात संत ज्ञानेश्वरांना तर त्याच समाजाने "माऊली" म्हणून संबोधले.

संत ज्ञानेश्वर हे महाराष्ट्रातील आमूलाग्र परिवर्तनाचे पथदर्शक होते. कुलपरंपरेने वैष्णव आणि गुरुपरंपरेने शैव असणाऱ्या ज्ञानेश्वरांनी समाजाला अचूक दिशादिग्दर्शन केले. त्यांनी कशाचाही लिहिलेले विपूल साहित्य हे त्यांचे प्रतिक आहे.

अध्यात्मविद्या ही विशीष्ट वर्गाची मक्तेदारी नाही तर सामान्य ही आत्मसात करू शकतो हा आत्मविश्वास लोकांच्या मनामध्ये निर्माण करण्याचे कार्य ज्ञानेश्वरांनी केले आणि म्हणूनच संत बहिणाबाईंनी "ज्ञानेश्वर रचिला पाया" अशा सार्थ शब्दात ज्ञानेश्वर महाराजांच्या अलौकिक कार्यांचे वर्णन केले आहे. संत ज्ञानेश्वरांनी विपूल ग्रंथ निर्मिती केली. ज्ञानेश्वरी, चांगदेवपासष्टी, अमृतानुभव आणि अनेक स्फूट अभंग लिहिले ज्ञानेश्वरी ही त्यांनी लिहिलेला ग्रंथ भगवद्गीतेवरील टीकाग्रंथ आहे. हा ग्रंथ मराठी भाष्य गंधाचाच नव्हे तर मराठी काव्याचाही मानदंड आहे. स्वतंत्र ग्रंथनिर्मितीचे सामर्थ्य त्यांचे ठायी असतानाही ते गीतेवर भाष्य करण्याकरीता भव्य भगवद्गीतेला स्वीकारतात हे महत्वपूर्ण आहे. परंतु गीतेकडे ज्ञानेश्वर हे केवळ भाष्यविषय म्हणून पाहत नाही. तर तो त्यांचा श्रद्धेचा, चिंतनाचा, प्रीतीचा, अनुभूतीचा आणि आस्वादाचा विषय आहे. आणि म्हणूनच ज्ञानेश्वरीत या सर्व भावभावनांचा साक्षात्कार घडतो. संत बहिणाबाईंनी "ज्ञानेश्वरीस इमारतीचा पाया मानले आहे. संत साहित्याची गंगोत्री मानले नाही. कारण ज्ञानेश्वरी हा एक वाग्यज्ञ आहे. त्यातून अखंड स्फूर्णाचा अनुभवांच्या ज्वालेतून प्रत्येक मराठी संताने आपली आंतरिक ज्योत प्रज्वलित करून घेतलेली आहे. ज्ञानेश्वरी हा आध्यात्मिक ज्ञानाचा जणू महासागर



आहे. ज्या ज्या संताने ह्या ज्ञानसागरातून आपल्या वाणीने पाट काढून दिले आहेत, त्यामुळे संतकाव्यातून ज्ञानेश्वरीच पाझरतांना दिसते आणि म्हणून फोडिले भांडार धन्याचा हा माल ! मी तो हमाल भारवाही, अशी सच्ची नम्रताचे पुढील संतांना व्यक्त करावीशी वाटते.”²

संत ज्ञानेश्वर हे शब्दसृष्टीचे ईश्वरच होते. त्यांनी लिहिलेली “ज्ञानेश्वरी” हा श्रेष्ठ काव्यग्रंथ आहे. ज्ञानेश्वरी शिवाय संतसाहित्याची संकल्पना करणे कठीण आहे आणि म्हणूनच मराठी काव्याचा मानदंड म्हणून ज्ञानेश्वरीचा उल्लेख केला जातो.

“वाचे बरवे कवित्व । कवित्चीबरवे रसिकत्व

रसिकत्वी परतत्व । स्पर्शुं जैसा ॥”

(ज्ञानेश्वरी अ.१८ ओवी ३४७)

ज्ञानेश्वरांनी मराठी संतकाव्याचे मूळ लक्षण आहे. त्यांनी काव्यनिर्मातेमध्ये शब्द शक्तीचा केलेला विचार पुढील संतांनी मार्गदर्शक ठरतो. संत नामदेव हे त्यांचे समकालीन होते. पूढे संत एकनाथ, संत गोरकुंभार, नरहरी सोनार, संत जनाबाई यासारख्या विविध संतांनी आणि पूढे तुकोबारायांनी याच विचारावरून वाटचाल केली.

महाराष्ट्रातील संतांची परंपरा ही ज्ञानेश्वरांपासून तुकारामपर्यंत तेजस्वी स्वरूपात आढळते. संत ज्ञानेश्वरांनी प्रस्तुत केलेल्या तत्त्वज्ञान संत नामदेव, संत एकनाथ आणि वारकरी संप्रदायातील संतांची अतुट श्रद्धा होती. ज्ञानदेवांचेच समकालीन नामदेव हे वारकरी पंथाचे आद्य प्रचारक होत. त्यांनी महाराष्ट्रातच नव्हे तर संपूर्ण भारतात प्रमत्ती करून वारकरी संप्रदायाचा प्रसार केला. संत ज्ञानदेवांनी वारकरी पंथाला तात्विक अधिष्ठान दिले. त्या प्रमाणे संत नामदेव हे तत्त्वचिंतकाच्या भूमिकेत दिसत नसले तरी त्यांनी ईश्वरभक्ती करण्याचा आदर्श निर्माण केला. पंढरीनगरी ही सर्व तीर्थांचे तीर्थ आहे अशी ऐकांतिक श्रद्धा समोर ठेवून वारकरी पंथाला सर्वदूर प्रसारित केले. सुरुवातीला सगुण भक्तीत रममाण झालेल्या संत नामदेवांना ज्यावेळी सर्वात्मिक परमेश्वराचे ज्ञान प्राप्त झाले त्यावेळी परमेश्वराच्या भक्ती रूपाला आपण अभंगाव्दारे प्रसारित केले. त्यांचे अभंग भारतात लोकप्रिय झाले.

विठ्ठलाच्या भक्तीने भारलेल्या संत ज्ञानदेव-नामदेव या संतांबरोबरच गोर कुंभार, नरहरी सोनार, सावता माळी, चोखा मेळा, सेना न्हावी, संत तुकाराम अशी विविध संतांची एक वारकरी संप्रदायाची प्रभावळ महाराष्ट्रात उदयाला आली. या सर्व संतांनी आपआपल्या व्यवसायाशी प्रामाणिक राहून विठ्ठलभक्तीचे महात्म्य अभंगातून वर्णन केले आणि विशेष म्हणजे त्यांनी आपल्या व्यवसायाची परिभाषा वापरून भक्तीला श्रेष्ठतम दर्जा दिले. हे संत टाळ कुटत राहिले नाही तर व्यवसायात मग्न होवून ते भक्तीत लीन झाले आणि स्वतःबरोबरच लोकांना आत्मविकासाची वाट त्यांनी मोकळी करून दिली.

संत नरहरी सोनार म्हणतात,

“देवा तुझा मी सोनार । तुझे नामाचा व्यवहार

देह बागेसरी जाणे । अंतरात्मा नाम सोने

त्रिगुणाची करुनी मूस । आत ओतिला ब्रम्हरसा”

तर संत सावता माळी म्हणतात.

“कांदा मुळा भाजी । अवची विठ्ठलबाई नाही

लसूण मिरची कोथिंबीरी । अवघा झाला माझा हरी ।”

या प्रमाणे व्यवसायाकडे लक्ष देवून आपला व्यवसाय हा विठ्ठलाच्या भक्तीला त्यांनी समर्पित केला.

संत ज्ञानदेव, नामदेव यांच्या नंतर विविध संत उदयाला आले आणि याच परंपरेत संत एकनाथ महाराजांच्या उदय झाला. संत ज्ञानेश्वरांची गुरुपरंपरा ही नाथपंथीय होती तशी संत एकनाथांची दत्त संप्रदायी होते कारण त्यांचे गुरु जनार्दनस्वामी हे दत्तोपासक होते आणि त्यांची कुलपरंपरा ही वैष्णवपंथीय होती. कारण त्यांचे पणजोबा भानुदास हे विठ्ठलभक्त होते. विठ्ठलभक्तीची कुलपरंपरा पाठीशी असल्याने त्यांच्याकडून वारकरी संप्रदायाच्या विकासात फार मोलाची भर टाकली. ज्या प्रमाणे संत ज्ञानेश्वरांनी संस्कृत भाषेवर प्रभुत्व असूनही “ज्ञानेश्वरी” ही मायमराठीत लिहून गीतेचा अर्थ सर्व सामान्यांना सांगितला त्याच प्रमाणे संत एकनाथानीही “भागवतपुराण मराठी भाषेत” लिहिले ज्यावेळी काशीच्या सनातनी लोकांनी त्यांनी याकरीता विरोध केला.

“संस्कृत भाषा देवे केली ।

तरी प्राकृत काय चोरपासून झाली ॥”

असा सवालही विचारण्यास ते मागे सरले नाही पण याचा अर्थ त्यांनी संस्कृत भाषेवर प्रेम केले नाही असे होत नाही तर उलट त्यांच्या मनात संस्कृत भाषेबद्दल अत्यंत आदर आणि प्रेम होते पण जी भाषा बहुजनांना



समजतच नाही तरी त्याच भाषेचा हेका धरणे त्यांना मान्य नव्हते. संत एकनाथांनी प्रपंच आणि परमार्थ यांची सांगड घालून जीवन जगण्याचा अमूल्य संदेश लोकांनी दिला एकनाथी भागवतात ते म्हणतात.

“हे देशभाषा वाणी । उघडिली परमार्थची खाणी ।

हे ऐका तरी मगठी । ज्ञानदाने होईल लाठी ।”

यावरून त्यांचे मगठी भाषेवरील आत्यंतिक प्रेम लक्षात येते.

याच वारकरी संत परंपरेत संत तुकाराम यांचे नाव प्रकर्षाने घ्यावे लागेल. इ.स.च्या १७व्या शतकातील युगप्रवर्तक संत म्हणजे तुकाराम महाराजांचा उल्लेख करावा लागेल. एक थोर संत, प्रतिभावंत कवी आणि समाजाच्या अध्ययनाकरिता आपले सर्वस्व अर्पण करणारे संत तुकाराम होय. ते विठ्ठलभक्त होते. त्यांची कतृत्वशक्ती अमोघ होती विठ्ठलाचा भक्ती त्यांना कुलपरंपरेने मिळाली होती. ते एका अभंगात लिहितात.

“पंढरीची वारी आहे माझे घरी ।

आणिक न करी तीर्थत्रत

माझ्या वडिलांसी मिरासी गा देवा।

तुझी चरण सेवा पांडुरंगा ।।”

त्यांचे व्यक्तिमत्व हे जन्मजात भावकवीचे होते. त्यांच्या वाणीत कमालीची प्रासादिकता, उत्कटता, उत्स्फूर्तता, कारुण्य, आत्मनिष्ठा होती त्यामुळे अंतरिचे धावे स्वभावे बाहेरी । यातून त्यांचे भावकाव्य निर्माण झाले. त्यातील एका अभंगाचा उल्लेख येथे करणे इष्ट ठरेल.

“कन्या सासुयासि जाये । मागे परतोनी पाहे ।

तैसे झाले माझ्या जिवा। केव्हा भेटसी केशवा ॥

चुकलिया माये बाळ हुरु हुरु पाहे ॥

जीवनावेगळी मासोळी । तैसा तुका तळमळी।।”

हा सुंदर भावाविष्कार त्यांच्या लेखणीत आहे. यावेळी ती अत्यंत मृदू बनते पण कधी पण त्याच प्रमाणे त्यांची लेखणी ही कधी अत्यंत धीट बनते. समाजातील वाईट कुप्रथांवर ते आपल्या लेखणीतून प्रहार करतात धर्माचे बाह्य अवडंबर, कर्मकांड यावर ते मार्मिक प्रहार करतांना दिसून येतात. समाजाला सामाजिक विषमता परमार्थाच्या नावावर लुटणाऱ्यांना भोंदूनां फटकारतात ते लिहितात.

ऐसे केसे जाले भोंदू । कर्म करोनी म्हणती साधू ॥

अंगा लवूनिया राख । डोळे झाकुनी करितो पाप ॥

दावुनी वैराग्याच्या कळ । भोगी विषयाचा सोहळ ॥

तुका म्हणे सांगो किती । जळो तयांची संगती ॥

(तुकाराम गाथा ३२४७)

एखाद्या संसारी व्यक्तीने संसारत राहून परमार्थ कसा साधावा हयाचे मूर्तिमंत उदाहरण म्हणजे संत तुकाराम महाराज होय.

संत ज्ञानेश्वरांनी वारकरी संप्रदायाची जी इमारतीचा पाया रचला त्या पायावर नामदेव, एकनाथ आणि अन्य संतजनांनी सुरेख इमारत रचली आणि त्या इमारतीवर कळस चढविण्याचे कार्य संत तुकारामांनी केली.

“आम्हा घरी धन शब्दांचीच रत्ने । शब्दांचीच शस्त्रे यत्न कर ।

शब्दचि आमुच्या जीवाचे जीवन । शब्दे वाटू धन जनलोका ।”

तुका म्हणे पहा शब्दचि हा देव । शब्देचि गौरव पूजा कर ।

त्यांच्या या शब्द कळेचे वैशिष्ट्य वा.ल.कुळकर्णी सांगतात.

“तुकारामांची वाणी ही अस्सल मराठमोळी आहे. ती शिष्टांची भाषा नाही. ती भाषा आपण सुसंस्कृत आहे हे दाखवत नाही. सुसंस्कृतपणाचा आव आणीत नाही. सुसंस्कृत बनण्याची घडपड करीत नाही. ती आपले सामर्थ्य लोक भाषेतून होते. लोकोभाषेची बोलण्याची पध्दती, त्या भाषेचे वाक्संप्रदाय त्या भाषेतील म्हणी, त्या भाषेतील बोलके शब्द घेऊन ती बोलत असते.”^३

अशा प्रकारे वारकरी संप्रदायातील संतांमध्ये विचार भावना आणि धारणा यांची श्रीमंती होती. या संतांनी महाराष्ट्र भूमीला त्याग, निष्ठा, सहिष्णूता, औदार्य आणि भक्ती यांनी सिंचित केले. संत ज्ञानेश्वरपासून संत एकनाथ, गोर कुंभार, चोखा महार, संत तुकाराम यांचा समाजाने असहय छळ केला. परंतु तो सहन करून समाजाला आपले प्रेम समर्पित केले कारण ते संत होते. संत कसा असावा हे सांगतांना तुकाराम महाराज म्हणतात.

तुका म्हणे तोचि संत । सोशी जगाचे आघात ।”

वारकरी संप्रदायाने देशी भाषेचा पूरस्कार करून अमूल्य साहित्य निर्मिती केली. या संप्रदायातील एकेक संत जणू एक संस्थाच होती. त्यांचा शब्द न शब्द हा अखंड स्फूर्तीचा प्रेरणास्त्रोत आहे.

लोकसंग्रह आणि लोक संघटन ही प्रभावी सुत्रे या संप्रदायाची होती. हा संप्रदाय लोकांना अधिक आवडला कारण या संप्रदायाने कधीच राजाश्रयाची आस बाळगली नाही. संत तुकोबारायांना शिवाजी महाराजांचे आमंत्रण आले तेव्हा तुकोबाराय म्हणाले,

“दिवव्या छत्री घोडे । हे तो बऱ्यात न पडे ।

राजगृहा यावे मानाचिया आसे । तेथे काय वसे समाधान”

समारोप

या संप्रदायाने लोकांना नीती, सदाचरण, भक्ती, त्याग यांची शिकवण दिली. ज्ञानेश्वरी, एकनाथी भागवत आणि तुकारामांची गाथा हे तीन ग्रंथ म्हणजे वारकरी संप्रदायाची प्रथानत्रयी होय असे म्हणतात. यात अनेक संतांनी मौलीक भर टाकली आणि हा अमूल्य ठेवा जनताजनार्दनापूढे ठेवला. या संप्रदायाची शिकवण आजही लोकांच्या हृदयसिंहासनावर कायम आहे. “ज्ञानेश्वरीच्या अभावी मराठी साहित्याची वास्तू विस्तारणे शक्य नसले तरी संतांच्या व्यक्तिमत्वानुसार त्याची उंची वाढली. ज्ञानेश्वर नसते तर नामदेवांची सगुणभक्ती निर्गुणाकडे झुकली नसती. संत एकनाथांना भागवतावर भाष्यग्रंथ रचण्याची प्रेरणा लाभली नसती. यादव काळातील संतांची “मांदियाळी” दिसली नसती. तुकारामांना श्रेष्ठ गीताधर्म आपल्या जीवनातून व साहित्यातून प्रवाहित करता आला नसता. महाराष्ट्राचा अभ्युदय साधणारी वारकरी पंथाची चळवळी उभी राहू शकली नसती आणि म्हणूनच प्रत्येक संताचे ज्ञानेश्वरीशी थेट पहिले नाते आहे.”

आणि म्हणूनच तेराव्या शतकात प्रवर्तित होवून धेट सतराव्या शतकात उभ्या असलेल्या वारकरी संप्रदायाचे भव्य वास्तुरूप संत बहिणाबाईसमोर उभे ठाकले आणि त्यांनी ज्ञानेश्वरांच्या ज्ञानेश्वरीला वारकरी संप्रदायाचा पाया असे संबोधले आणि त्या पायाला आपल्या कर्तृत्वाने आणि वाणीने पूढील संतांनी संचीत केले आणि संत तुकोबांनी त्यावर कळस चढविला म्हणूनच म्हणात. “ज्ञानदेव रचिला पाया । तुका झालासे कळस।।”

निष्कर्ष :-

१. महाराष्ट्रामध्ये जे विविध संप्रदाय आहेत. त्यातीलच एक संप्रदाय म्हणजे वारकरी संप्रदाय होय.
२. लोकाभिमुखता वारकरी संप्रदायाचे एक फार मोठे वैशिष्ट्य होय.
३. समाजधारणेला आवश्यक असणारी कर्म सोडण्याचा उपदेश या संप्रदायाने कधीच केला नाही.
४. वारकरी संतांनी राजाश्रयाची आस कधीच बाळगली नाही.
५. वारकरी संप्रदाय ज्ञानेश्वरांच्या पूर्वी अस्तित्वात होता पण या पंथाला खऱ्या अर्थाने तात्विक अधिष्ठान दिले ते ज्ञानेश्वराने.
६. प्रपंच आणि परमार्थ यांची सांगड घालून मनुष्य आपले जीवन आनंदाने व्यतित करू शकतो. हे या संप्रदायातील संतांनी सांगितले.

संदर्भ टीपा

१. मराठी विश्वकोश, खंड १६, पृ. क्र. ७८
२. लेख- सुहासिनी इर्लेकर- संतसाहित्य: अभ्यासाच्या काही दिशा पृ. १९
३. युगप्रवर्तक संत तुकाराम रामदास - पृ. ७२
४. मराठी विश्वकोश खंड १६ पृ. ८१
५. संपादक- डॉ. कल्याण काळे, रा.श.नगरकर - संत साहित्य अभ्यासाच्या काही दिशा पृ. २०

संदर्भ ग्रंथ

१. मराठी विश्वकोष - खंड १६ - मुख्य संपादक - मे.पुं. रेगे
२. बा.र.सुठणकर महाराष्ट्रातील संत मंडळाचे ऐतिहासिक कार्य, प्रकाशक - लोकवाडमयगृह मुंबई
३. संपादक - डॉ. कल्याण काळे, रा.शं. नगरकर, संत साहित्य : अभ्यासाच्या काही दिशा प्रकाशक:- श्री. एल.व्ही.तारे, पुणे
४. संपादक :- डॉ. मुकुंद दातार - मध्ययुगीन धर्मसंप्रदायी वाडमय - एक विहगदर्शन प्रकाशक :- स्नेहल प्रकाशन, पुणे.
५. डॉ. स.रा.गाडगीळ - मराठी काव्याचे मानदंड, खंड पहिला - पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.



Principal
Arts & Sci. College
Kurha